विदेशी पाठ्यक्रम

हिंदी साहित्य की रूपरेखा

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

अन्य/विदेशी भाषा शिक्षण पाठमाला–3

हिंदी साहित्य की रूपरेखा

पाठ निर्माण

डॉ० रवि प्रकाश गुप्त

डॉ० रवींद्र शर्मा

संपादन एवं संयोजन

प्रो० सतीश कुमार रोहरा

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

प्रथम संस्करण : 1991

मूल्य : { रु० 22.00 (भारत में)
यू० एस० $ 11.00 (विदेश में)

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा प्रकाशित और नरेन्द्रा प्रिंटर्स, आगरा में मुद्रित

आमुख

केंद्रीय हिंदी संस्थान की स्थापना शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 1961 में की गई। हिंदी के अखिल भारतीय स्वरूप संबंधी अध्ययन और अनुसंधान, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के व्यतिरेकी और तुलनात्मक अध्ययन, हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण की अधुनातन प्रविधियों का विकास और प्रसार, विभिन्न वर्गों और स्तरों के अध्येताओं के लिए अधुनातन अनुप्रयुक्त भाषा-वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित शिक्षण-सामग्री का निर्माण, अहिंदी-भाषी प्रांतों के लिए हिंदी अध्यापकों का प्रशिक्षण एवं अहिंदी-भाषी प्रांतों की राज्य सरकारों की स्वैच्छिक संस्थाओं तथा अन्य अभिकरणों को हिंदी शिक्षा विषयक पाठचर्या एवं पाठ्य-सामग्री तैयार करने में सहायता, विदेशी अध्येताओं के लिए हिंदी के शिक्षण-प्रशिक्षण की व्यवस्था, विभिन्न व्यावहारिक एवं प्रयोजनपरक क्षेत्रों में उपयोग की जाने वाली मानक हिंदी की प्रयुक्तियों का विकास और तत्संबंधी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण आदि इसके प्रमुख प्रकार्य हैं। हिंदी अध्यापकों के शिक्षण-प्रशिक्षण के कार्य से प्रारंभ होकर आज यह संस्थान एक अंतर्राष्ट्रीय महत्व की संस्था के रूप में विकसित हो गया है। संस्थान के अध्यापक एवं अनुसंधानकर्ता अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान एवं भाषा-शिक्षण से संबद्ध विविध क्षेत्रों में कार्य करते हैं।

संस्थान के दिल्ली केंद्र में पिछले दो दशकों से विदेशी छात्रों को हिंदी सिखाने का कार्य किया जा रहा है। धीरे-धीरे इस श्रृंखला में प्रारंभिक से लेकर उच्चतम स्तर तक के चार अनुक्रमित पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं। विदेशियों को हिंदी का अध्यापन कराने के लिए उपयोगी और प्रभावी शिक्षण सामग्री का बड़ा अभाव है। उपलब्ध शिक्षण सामग्री या तो विशेष प्रकार के छात्रों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर तैयार की गई है या काफी पहले तैयार की हुई है। इस सयम तक अन्य भाषा शिक्षण के सैद्धांतिक और प्रायोगिक परिप्रेक्ष्यों में और शिक्षण प्रविधियों में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हो गये हैं। शिक्षण सामग्री की अनुपलब्धता और भाषा शिक्षण के

क्षेत्र में हुए सैद्धांतिक और अनुप्रयोगात्मक विकासों के परिप्रेक्ष्य में संस्थान ने विदेशियों को हिंदी भाषा के प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण सामग्री के निर्माण का कार्य प्रारंभ किया है। प्रारम्भिक स्तर पर हिंदी सीख लेने के बाद विद्यार्थी हिंदी साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए भी अक्सर माँग करते हैं और हिंदी में लिखित साहित्य का स्वरूप और उसका ऐतिहासिक विकास जानने के लिए प्रयास करते हैं। हिंदी साहित्य के ऐतिहासिक विकास पर लिखे गए ग्रंथ/विवरण सामान्यतया हिंदी भाषियों के लिए तथा अन्य भारतोय अध्येताओं के लिए ही इस समय उपलब्ध हैं। विदेशयों के लिए संक्षिप्त एवं आवश्यक जानकारी देने वाले ग्रंथों का लगभग अभाव-सा है।

प्रस्तुत पुस्तक हिंदी साहित्य के इतिहास का एक अत्यंत प्रारंभिक विवरण देता है। साथ ही दी गई सामग्री छात्रों द्वारा किस सीमा तक आत्मसात् की गयी है इसकी जाँच करने के लिए आवश्यक अभ्यास आदि भी दिए गए हैं। यह पुस्तिका हिंदी साहित्य के ऐतिहासिक विकास के क्रम में प्रथम और प्रारंभिक है। इससे अधिक उच्च स्तर की दो और पुस्तकें भी इस क्रम में तैयार की गयी हैं और प्रकाशनाधीन हैं।

इस ग्रंथ के लिए इसके लेखक साधुवाद के पात्र हैं। हम आशा करते हैं कि इस माला के ग्रंथों से विदेशी विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के इतिहास के बारे में जानकारी मिल सकेगी।

(बाल गोविन्द मिश्र)
निदेशक

साहित्य की रूपरेखा

पूर्व कथन—

विदेशी भाषा शिक्षण में, साहित्य शिक्षण की उपयोगिता आज सर्वमान्य है। यह बात आज स्वीकार की जा रही है कि केवल भाषा की संरचनाओं के अध्ययन से किसी भ षा के प्रभावशालो सम्प्रेषण की क्षमता प्राप्त नहीं हो सकती। भाषा का सम्प्रेषण-क्षेत्र समाज है और सामाजिक स्थितियों तथा तथ्यों की जानकारी का सब से उत्तम माध्यम साहित्य है। साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से सामाजिक तथ्यों की जानकारी देने के साथ, संबंधित भाषा की संरचनाओं को सुरुचिपूर्ण ढंग से सिखाया जा सकता है तथा साहित्य के इतिहास से उस भाषा के तत्कालीन समाज की जानकारी तो प्राप्त होती ही है, इसके साथ-साथ उस भाषा की साहित्यिक प्रवृत्तियों का भी बोध होता है।

इस पुस्तक का उद्देश्य हिंदी सीखने वाले विदेशी छात्रों को हिंदी साहित्य के इतिहास से परिचित कराना है।

यह पुस्तक उन विदेशी छात्रों के लिए है जो कम से कम एक साल के लिए हिंदी का अध्ययन कर चुके हैं।

इतिहास-शिक्षण की कठिनाई एवं नीरसता को ध्यान में रखते हुए यह पुस्तक वार्तालाप शैली में लिखी गयी है यह वार्तालाप अध्यापक एवं छात्रों के बीच है। छात्र प्रश्न करते हैं और अध्यापक उनका उत्तर देते हैं। इस प्रश्नोत्तर के माध्यम से हिंदी साहित्य की एक झलक प्रस्तुत होती है।

प्रत्येक पाठ के अंत में विशेष शब्दों/अभिव्यक्तियों पर अलग से टिप्पणियाँ दी गयी हैं तथा छात्र के प्राप्त ज्ञान के मूल्यांकन हेतु प्रत्येक पाठ के बाद अभ्यास दिये गए हैं।

इस पुस्तक में कुल पंद्रह पाठ हैं। पहले छह पाठों में हिंदी साहित्य के आदि काल एवं मध्य काल (भक्तिकाल तथा रीतिकाल) तथा शेष नौ पाठों में हिंदी साहित्य के आधुनिक काल का वर्णन है। आधुनिक काल को इसलिए ज्यादा महत्व दिया गया है क्योंकि हिंदी पढ़ने वाले विदेशी छात्रों की रुचि हिंदी-भाषी समाज के वर्तमान रूप में ज्यादा है।

यह पुस्तक यद्यपि हिंदी सीखने वाले विदेशी छात्रों के लिए तैयार की गयी है किन्तु हमें आशा है कि हिंदी साहित्य की आरंभिक जानकारी प्राप्त करने वाले सभी शिक्षार्थियों के लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के निर्माण कार्य में डॉ० मीरा सरीन (लेक्चरर), श्री अजेय पंडित (अनुसंधान सहायक) तथा कु. संघमित्रा (अनुसंधान सहायक) का महत्वपूर्ण सहयोग रहा है।

सतीश कुमार रोहरा
संपादक

विषय-सूची

पाठ–1

हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन

हिंदी साहित्य का आरंभ तथा काल विभाजन,
काल विभाजन एवं नामकरण का आधार,
हिंदी साहित्य के विभिन्न काल

अध्यापक : छात्रो ! आपने हिंदी भाषा का परिचय तो प्राप्त कर लिया है । अब आप हिंदी भाषा के साहित्य के बारे में भी कुछ जानना चाहते हैं या नहीं ?

एक छात्र : हाँ सर ! हमारी बहुत इच्छा है कि आप हमें हिंदी साहित्य के बारे में कुछ बताएँ ।

दूसरा छात्र : सर ! सबसे पहले तो हमें यह बताइए कि हिंदी साहित्य का आरंभ कब से होता है ?

अध्यापक : आपने अच्छा सवाल पूछा । हिंदी साहित्य की शुरुआत ग्यारहवीं शताब्दी से मानी जाती है । इस प्रकार आरंभ से आज तक लगभग

एक हजार साल के हिंदी साहित्य को चार कालों में बाँटा गया है।

छात्र : सर ! वे चार काल कौन-कौन से हैं ? उनके नाम क्या हैं ?

अध्यापक : उन कालों के नाम हैं :

(1) आदिकाल अथवा वीरगाथा काल

(2) पूर्व मध्यकाल अथवा भक्तिकाल

(3) उत्तर मध्यकाल अथवा रीतिकाल

(4) आधुनिक काल अथवा गद्यकाल

दूसरा छात्र : सर ! हिंदी साहित्य के इतिहास को जो अलग-अलग कालों में बाँटा गया है, उसका आधार क्या है ?

अध्यापक : इस विभाजन का आधार है रचनाओं के विषय की प्रधानता। जिस काल में किसी विशेष विषय की रचनाओं की संख्या अधिक दिखाई पड़ती है उस काल को उसी विषय के अनुसार नाम दिया गया है।

एक छात्र : सर ! अब आप यह बताइए कि आदिकाल का मतलब क्या है और इसे वीरगाथा काल भी क्यों कहते हैं ?

अध्यापक : हिंदी के शुरू के लगभग तीन सौ साल के साहित्य को "आदिकाल" कहा जाता है। "**आदि**" का मतलब है "**आरंभ**"। इसलिए "**आदिकाल**' का अर्थ हुआ हिंदी साहित्य का शुरू का काल या "**आरंभिक काल**"। इस काल को वीरगाथा काल भी कहते हैं। "**वीर**" का अर्थ तो आप जानते ही हैं ? वीर माने बहादुर। और "**गाथा**" का अर्थ है "**कथा**" या "**कहानी**"। इसलिए "**वीरगाथा**" का अर्थ हुआ "**वीरों की' कहानियाँ**"। बात यह है कि इस काल में जो साहित्य लिखा गया है, उसमें वीरों की कहानियाँ हैं। उस समय के साहित्य में लड़ाइयों का

काफ़ी वर्णन है। बहुत से कवि तो ऐसे थे जो खुद वीर थे और लड़ाइयों में भी भाग लेते थे। इसलिए इस काल को वीरगाथा काल भी कहते हैं।

पहला छात्र : सर इसका अर्थ है कि उस समय के साहित्य में वीरता और लड़ाइयों से भरी हुई रचनाएँ अधिक हैं ?

दूसरा छात्र : सर ! यह भी बताइए कि क्या उस समय वीरता और लड़ाइयों की रचनाओं के अलावा दूसरी तरह की रचनाएँ नहीं लिखी गईं ?

अध्यापक : यह बात तो सही है कि आदिकाल के साहित्य में वीरता और लड़ाइयों के वर्णनों की रचनाएँ तो अधिक हैं परंतु इनके अलावा जैनों का, तथा नाथों एवं सिद्धों का साहित्य भी काफी मात्रा में लिखा गया है, लेकिन इस साहित्य में साहित्य की विशेषताएँ कम हैं, धार्मिक विशेषताएँ अधिक हैं। वास्तव में इस काल में वीर रस की रचनाएँ ही अधिक मिलती हैं।

छात्र : आदिकाल में इस प्रकार का ही साहित्य क्यों लिखा गया, सर !

अध्यापक : आदिकाल में भारत की राजनैतिक हालत बहुत खराब थी। हिंदू राजा आपस में लड़ते थे। विदेशी हमलों के समय ये राजा आपस में एक दूसरे की सहायता नहीं करते थे। इनके दरबार में जो कवि रहते थे वे अपने-अपने राजाओं की तारीफ में कविता लिखते थे। ये कवि राजाओं के साथ लड़ाइयों में जाते थे और वहाँ भी उनको जोश भरी कविताएँ सुनाते थे तथा आवश्यकता पड़ने पर खुद भी लड़ते थे। इन कवियों को **"चारण कवि"** कहा जाता था। आदिकाल की अधिकतर वीरगाथाएँ इन्हीं चारण कवियों द्वारा लिखी गईं हैं।

छात्र : सर ! इसका मतलब तो यह है कि भक्तिकाल में भक्ति की रचनाएँ अधिक लिखी गई होंगी ।

अध्यापक : बिलकुल ठीक । भक्तिकाल में भक्ति की रचनाओं की संख्या बहुत है । इस काल में कुछ रचनाएँ वीरगाथा काल जैसी भी लिखी गयी हैं लेकिन अधिकतर भक्ति का साहित्य ही लिखा गया है ।

छात्र : सर ! भक्तिकाल में भक्ति संबंधी साहित्य ही क्यों लिखा गया ?

अध्यापक : उस काल में भी भारत की आर्थिक और राजनैतिक दशा अच्छी नहीं थी । मुसलमानों के हमले हो रहे थे । यहाँ के लोगों की संस्कृति, धर्म, विश्वास सभी कुछ खतरे में पड़ गया था । धर्म और जाति के नाम पर गरीब और छोटी जाति के लोगों पर अत्याचार हो रहे थे । लोगों का राजा और शासन व्यवस्था में विश्वास नहीं रह गया था । ऐसी हालत में ईश्वर का ही सहारा होता है । भक्ति का रास्ता ही मनुष्य को शक्ति देता है । यही कारण है कि इस काल में भक्तों और संतों ने अपने साहित्य के द्वारा लोगों को भक्ति का रास्ता दिखाया । इसलिए इस काल में भक्ति की रचनाएँ ही अधिक हैं ।

छात्र : सर ! तब तीसरे काल, रीतिकाल का क्या मतलब है ? इस काल का नाम कैसे उस काल की रचनाओं की विशेषताओं को बताता है ?

अध्यापक : रीति का अर्थ है "**पद्धति**" या प्रणाली या तरीका । यहाँ रीति से मतलब है "**काव्य रचना की पद्धति**" । इस काल में कवियों ने काव्यशास्त्र की पद्धति या नियमों के अनुसार कविताएँ लिखी हैं इसलिए इस काल को रीतिकाल कहते हैं । इस काल को श्रृंगारकाल भी कहते हैं । **श्रृंगार** का अर्थ है प्रेम । इस काल में अधिकतर ऐसी

कविताएँ हैं जिनमें स्त्री के शरीर की सुंदरता और प्रेम का बहुत ज्यादा वर्णन है ।।

छात्र : सर ! रीतिकाल में इस तरह की कविता क्यों लिखी गयी ?

अध्यापक : रीतिकाल के अधिकतर कवि राज-दरबारों के कवि हैं। देश में **मुगलों** का शासन जम चुका था। दरबारों में भोगविलास का वातावरण था। इस युग के कवि अपने राजाओं को प्रसन्न करने के लिए चमत्कार पूर्ण कविताएँ लिखते थे। इसीलिए इस युग की कविता में भाव तथा भाषा का चमत्कार आदि विशेषताएँ देखने को मिलती हैं।

छात्र : सर ! चौथे काल का नाम आधुनिक काल क्यों पड़ा ? आधुनिक काल से साहित्य की कौन सी विशेषताओं का पता चलता है ?

अध्यापक : "आधुनिक" का अर्थ है "**नया**"। हिंदी साहित्य का जो काल अभी चल रहा है उसे ही आधुनिक काल कहते हैं।

छात्र : सर ! फिर आधुनिक काल को "**गद्यकाल**" तथा "**स्वतंत्रता काल**" क्यों कहते हैं।

अध्यापक : आधुनिक काल से पहले हिंदी में केवल कविताएँ ही लिखी जाती थीं। आधुनिक काल में गद्य में भी रचनाएँ लिखी गयीं। उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध आलोचना सभी तरह का साहित्य इस काल में सामने आया। इस साहित्य में देश को स्वतंत्र कराने की इच्छा भी दिखाई देती है। इसीलिए इसे "**गद्यकाल**" या "**स्वतंत्रता काल**" भी कहा जाता है।

छात्र : ऐसी कौन-सी बातें थीं जिनके कारण आधुनिक काल के साहित्य में इस तरह का बदलाव आया ?

अध्यापक : इस युग में एक ओर तो भारत पर अंग्रेजों का राज्य जम चुका था। दूसरी ओर भारत में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए आन्दोलन शुरू हो गए थे। सब लोग मिलकर अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने की कोशिश कर रहे थे। अंग्रेजों ने अपना राज्य चलाने के लिए इस देश में छापेखाने, स्कूल-कालेज, रेल, डाक-तार आदि खोले थे। भारत में अंग्रेज ईसाई धर्म का प्रचार कर रहे थे। इसके विरोध में भारत में धार्मिक और सामाजिक सुधार की भावना तेज हो रही थी। स्त्रियों को समाज में ऊँचा स्थान मिलने लगा था। यहाँ के साहित्यकार अब पश्चिम की भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के संपर्क में आ रहे थे। इस सबके कारण ही आधुनिक हिंदी साहित्य में बदलाव आया।

इस प्रकार आप लोगों ने इस पाठ में हिंदी साहित्य के इतिहास के चारों कालों के बारे में संक्षेप में जानकारी हासिल की। आगे के पाठों में आपको हर एक काल के बारे में विस्तार से जानकारी दी जाएगी।

टिप्पणियाँ

रस

भारतीय काव्यशास्त्र में "रस" का अर्थ आनंद माना गया है। यह "आनंद" भौतिक आनंद से भिन्न है। यह हमारे मन का या चित्त का आनंद है। हम मीठी चीज़ें खाकर भी खुश होते हैं और तीखी, चटपटी चीज़ें खाकर भी। लेकिन खाने-पीने में जैसे हमें सुख मिलता है उसी तरह साहित्य में भी सुख-दुःख से भरे वर्णनों से मन को आनंद मिलता है। यही आनंद "**रस**" कहलाता है।

हम सब के मन में प्रेम, घृणा, भय, दुःख, क्रोध आदि के भाव रहते हैं। जब इन भावों को जगाने वाला कोई भाव अथवा कोई वस्तु आ जाती है तब ये भाव जग जाते हैं। जैसे यदि कोई हमारे भाई को मारता है तो हमारे मन में क्रोध का भाव जागता है; या हँसी की बात सुनकर हँसी आती है; या किसी प्रिय की मृत्यु का समाचार सुनकर दुःख होता है। साहित्य के द्वारा भी हमारे ये भाव जगते-दबते रहते हैं। दुःख भरा नाटक देखकर हम रोने लगते हैं और प्रेम का दृश्य देखकर प्रेम में डूब जाते हैं। लेकिन जीवन में घटने वाली सच्ची घटनाओं से जगने वाले "**भावों**" और कविता-नाटक के द्वारा जगने वाले हमारे मन के भावों में एक अंतर होता है। पहले प्रकार के भाव हमारे मन में सुख-दुःख भरा अनुभव पैदा करते हैं अर्थात दुःख में हम दुखी होते हैं और सुख में सुखी। लेकिन कविता-नाटक अथवा कहानी में सभी तरह के भावों में हमें "**आनंद**" का अनुभव होता है। जब हम कोई अच्छी कविता या कहानी पढ़ते हैं, या कोई अच्छा नाटक देखते हैं तो कुछ देर के लिए हम अपने आपको भूल जाते हैं और कविता, कहानी अथवा नाटक की घटना में खो जाते हैं और कहानी अथवा नाटक के पात्रों के साथ-साथ हम हँसते हैं और रोते भी हैं। हम यह भूल जाते हैं कि कहानी या नाटक के पात्रों से हमारा कोई संबंध नहीं है। पात्रों की सभी घटनाएँ हमें अपनी लगती हैं। यही साहित्य की आनंद अवस्था है। इसे ही "**रस**" कहा गया है।

रीति

"रीति" का अर्थ होता है **"पद्धति"** । संस्कृत साहित्य में एक विशेष प्रकार के साहित्य लिखने की पद्धति का विकास हुआ था। कवि लोग कविता लिखने के साथ-साथ उसके नियम आदि भी समझाते थे। वे किसी नियम या सिद्धांत को समझाने के लिए पहले उसका लक्षण देते थे अर्थात् उसकी परिभाषा बताते थे और फिर उसी बात को उदाहरण देकर समझाते थे। हिंदी के रीतिकाल के कवियों ने भी इसी तरह के लक्षण-उदाहरण देकर साहित्य लिखना आरंभ किया। यह कविता एक विशेष **"पद्धति"** या **"रीति"** की थी। इसीलिए इस काल का नाम **"रीति काल"** पड़ गया।

जैन साहित्य

हिंदी साहित्य के आरंभिक काल के विकास में जैन धर्म का बहुत बड़ा हाथ है अपभ्रंश भाषा में जैनों द्वारा बहुत से ग्रंथ लिखे गए हैं। जैन कवियों ने अपने धर्म के प्रचार के लिए ये ग्रंथ लिखे हैं। इनमें स्वयंभू, पुष्पदंत आदि कवियों के नाम प्रसिद्ध हैं। जैन साहित्य की इसी परंपरा में हिंदी के आदिकाल की अनेक रचनाएँ लिखी गयी हैं।

नाथ साहित्य

सिद्धों की विचारधारा को और अधिक आगे बढ़ाने का काम नाथों ने किया। वास्तव में नाथ लोग सिद्ध और संतों के बीच की एक कड़ी हैं। इन्होंने नीति, संयम, योग आदि विषय से संबंधित साहित्य लिखा है। 'चौरासी सिद्ध' की तरह **"नवनाथ"** (नौ नाथ) भी प्रसिद्ध हैं। इनमें **"शिव"** आरंभिक नाथ माने गए हैं। इसके बाद मत्स्येंद्र नाथ, गोरखनाथ आदि मुख्य हैं। इस संप्रदाय के प्रत्येक योगी के साथ **"नाथ"** शब्द अवश्य जुड़ा रहता है।

श्रृंगार रस

"प्रेम" का भाव जब **"आनंद"** की स्थिति तक पहुँचता है तब वह "श्रृंगार"

रस" कहा जाता है। कविता या नाटक में किसी प्रेमी और प्रेमिका के बीच में दिखाए गए "प्रेम" के भाव से जब हमारे मन में रहने वाला "प्रेम" का भाव भी जग जाता है और उस "प्रेम" के भाव में हम "आनंद" का अनुभव करते हैं, तब उसे "शृंगार रस" कहते हैं।

वीर रस

साहित्य में वीर रस की स्थिति तब आती है जब किसी वीरता पूर्ण वर्णन से हमारे मन में "उत्साह" का भाव जगता है और उसमें हम आनंद का अनुभव करते हैं। वास्तव में उत्साह की दशा में प्राप्त आनंद ही वीर रस कहा जाता है।

सिद्ध साहित्य

हिंदी के आदिकाल में सिद्ध-साहित्य काफी मात्रा में उपलब्ध है। आठवीं शताब्दी से ही सिद्ध साहित्य की रचनाएँ मिलती हैं। जो लोग मंत्रों के द्वारा सिद्धि प्राप्त करते थे, वे सिद्ध कहलाते थे। ये लोग ईश्वर में विश्वास करते थे। गृहस्थ जीवन पर इन्होंने बल दिया। भोग विलास का इन्होंने विरोध किया। सिद्धों में सरहपा-शबरपा आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। सिद्ध साहित्य का प्रभाव हमें आगे चल-कर कबीर, नानक, दादू आदि संत कवियों की रचनाओं में मिलता है। सिद्ध में चौरासी (84) सिद्धों के नाम प्रसिद्ध हैं। इन चौरासी सिद्धों का समय सं० 791 से सं० 1251 तक माना जाता है।

अभ्यास

1. नीचे दिए गए कथनों पर सही (√) अथवा गलत (×) का निशान लगाइए—

   (क) हिंदी साहित्य का आरंभ पंद्रहवीं शताब्दी से माना जाता है। ( )

   (ख) भक्तिकाल में वीर रस की रचनाएँ अधिक लिखी गईं। ( )

   (ग) रीतिकाल में श्रृंगार की रचनाएँ लिखी गईं। ( )

   (घ) हिंदी में गद्य साहित्य का आरंभ आधुनिक काल से होता है। ( )

   (ङ) आधुनिक काल के साहित्य में राष्ट्रीय भावना दिखाई देती है। ( )

2. उचित शब्द डालकर वाक्य पूरे कीजिए—

   (क) हिंदी साहित्य के इतिहास को.....................कालों में बाँटा गया है। उनके नाम हैं—वीरगाथा काल.....................तथा.....................।

   (ख) वीरगाथा काल के कवि अपने राज़ाओं के साथ खुद भी..............................में भाग लेते थे।

   (ग) आदिकाल में वीरता और लड़ाइयों के अलावा जैन साहित्य तथा नाथों और.....................का साहित्य भी मिलता है।

   (घ) आदिकाल में.....................रस की तथा रीतिकाल में.....................रस की कविताएँ लिखी गईं।

   (ङ) आधुनिक काल में गद्य की अनेक विधाओं जैसे कहानी,..............................निबंध आदि का विकास हुआ।

पाठ—2

आदिकाल या वीरगाथा काल

आदिकालीन साहित्य की परिस्थितियाँ और
प्रमुख विशेषताएँ/आदिकाल के प्रमुख
कवि और उनकी रचनाएँ

अध्यापक : आप जानते हैं कि हिंदी साहित्य का पहला काल आदिकाल है। आदिकाल को हम वीर गाथा काल भी कहते हैं। इस पाठ में आप आदिकाल के साहित्य के विषय में पढ़ेंगे। पिछले पाठ में आपने पढ़ा कि वीरगाथा काल में वीरता तथा लड़ाइयों के विषय में अधिक कविताएँ लिखी गयी हैं।

छात्र : सर ! आपने बताया कि वीरगाथा काल से ही हिंदी साहित्य शुरू होता है। तब इससे पहले किस भाषा में रचनाएँ लिखी जाती थीं ?

अध्यापक : आपने ठीक पूछा। वीरगाथा काल से पहले अपभ्रंश भाषा में साहित्य लिखा जाता था। अपभ्रंश भाषा से ही आधुनिक हिंदी भाषा का विकास हुआ है। इसलिए आदि काल के शुरू के भाग में जो रचनाएँ लिखी गयीं उनकी भाषा अपभ्रंश से बहुत मिलती है।

पहला छात्र : सर ! क्या आदिकाल के आरंभ की रचनाओं की भाषा और आदिकाल के अंत की भाषा में भी अंतर है ?

दूसरा छात्र : सर ! यदि अंतर है तो क्या आप कुछ उदाहरण देकर बता सकते हैं ?

अध्यापक : हाँ अंतर है। आदिकाल के आरंभ के साहित्य की भाषा और उस काल के अंत के साहित्य की भाषा में अंतर है। चंदबरदाई की रचना "**पृथ्वीराज रासो**" आदि काल के आरंभ की रचना है। अमीर खुसरो की रचनाएँ आदिकाल के अंत की रचनाएँ हैं। इन दोनों की भाषा में जो अंतर है वह आप देख सकते हैं। "**पृथ्वीराज रासो**" से पृथ्वीराज की वीरता के वर्णन का एक उदाहरण आप देखिए—

बज्जिय घोर निसान रान चौहान चहूँ दिसि।
सकल सूर सामंत समर बल जंत्र मंत्र तिसि ।।
उट्ठि राज पृथ्वीराज बाग लग्ग मनो वीरनट।
कढ़त तेग मनोवेग लगत बीज झट्ट घट्ट।

अब आप .खुसरो की पहेलियों की भाषा का नमूना देखिए —

एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।

"**पृथ्वीराज रासो**" के पद की भाषा पढ़ने से ऐसा लगता है जैसे हम अपभ्रंश की कोई रचना पढ़ रहे हों, जबकि अमीर खुसरो की भाषा आपको एक दम परिचित लगेगी।

छात्र : सर ! आपने हमें अभी यह तो बताया ही नहीं कि आदिकाल का आरंभ कब से होता है और इसका समय कब तक माना जाता है ?

अध्यापक : लीजिए। अब आपको आदिकाल के आरंभ की तिथि के विषय में बताते हैं। कुछ विद्वान तो इस काल को आठवीं शताब्दी से आरंभ हुआ मानते हैं लेकिन अधिकतर लोग इस बात को नहीं मानते। वे लोग आदिकाल का समय संवत् 1050 से संवत् 1375 तक मानते हैं। इस तरह से 11 वीं शताब्दी के अंत से लेकर तेरहवीं शताब्दी के अंत तक का समय आदिकाल का समय समझना चाहिए।

छात्र : सर ! आदिकाल के साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ कौन-सी हैं ? वे भी बताइए।

अध्यापक : आदिकाल के साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

1. आदिकाल में जो काव्य लिखे गए हैं उन काव्यों में उस समय के प्रसिद्ध राजाओं और उनके जीवन, युद्ध आदि के बारे में कहा गया है। फिर भी ये रचनाएँ काव्य हैं इतिहास नहीं हैं। इसलिए इनमें "ऐतिहासिक तथ्य" कम हैं, कवि की कल्पना अधिक है।
2. इस काल के कवि प्रायः राजाओं की प्रशंसा में कविताएँ गाकर सुनाते थे इसलिए इन कवियों को चारण कवि कहा गया है।
3. इस काल के कवि अपने राजाओं के साथ लड़ाइयों में भी जाते थे और आवश्यकता पड़ने पर युद्ध भी करते थे। इसलिए इन काव्यों में युद्धों का बड़ा ही सजीव वर्णन हुआ है।
4. इस समय का बहुत-सा साहित्य राजस्थान में लिखा गया है। इन काव्यों में उस समय की राजस्थानी भाषा का खूब प्रयोग हुआ है। उस समय की राजस्थानी भाषा को "डिंगल भाषा" कहते थे।

छात्र : सर ! वीर गाथा काल के कुछ प्रमुख कवियों के नाम तथा उनकी मुख्य रचनाओं के नाम भी बताइए।

अध्यापक : इस काल के प्रमुख कवि और उनकी मुख्य रचनाएँ इस प्रकार हैं—

नरपति नाल्ह की "**बीसलदेव रासो**"

चंदबरदाई की "**पृथ्वीराज रासो**"

जागनिक की "**परमाल रासो**" और

अमीर खुसरो की "**पहेलियाँ**"

छात्र : इन सब कवियों में सबसे प्रमुख ग्रंथ कौन-सा है ? उसके तथा उसके कवि के विषय में कुछ बताइए।

अध्यापक : इन सब में चंदबरदाई का "**पृथ्वीराज रासो**" सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह राजा पृथ्वीराज चौहान के जीवन पर लिखा गया है। चंदबरदाई राजा पृथ्वीराज के समकालीन थे। वे सभा में, लड़ाइयों में, शिकार पर तथा यात्राओं में हमेशा राजा पृथ्वीराज के साथ रहते थे। उन्होंने इस महाकाव्य में शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी तथा पृथ्वीराज चौहान के युद्धों का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया है। वास्तव में "**पृथ्वीराज रासो**" में वीर-रस के साथ-साथ श्रृंगार का वर्णन भी बड़ा ही मन को छू लेने वाला है। कवि ने इसमें लगभग 68 प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है।

टिप्पणियाँ

अपभ्रंश भाषा

भारत की सबसे पुरानी भाषा संस्कृत भाषा है। संस्कृत भाषा से पाली भाषा का विकास हुआ। पाली भाषा में ही बौद्धों के शिलालेख मिलते हैं। पाली से "**प्राकृत**" भाषा विकसित हुई। प्राकृत के बाद जो भाषा-रूप बोलचाल में आया वह "**अपभ्रंश**" है। "**अपभ्रंश**" भाषा का वास्तविक नाम "**अपभ्रष्ट**" था। प्राकृत भाषा-भाषी इसे "**अपभ्रष्ट भाषा**" कहते थे। इसका अर्थ है वह भाषा जो भ्रष्ट या खराब हो गई हो। हिंदी का विकास अपभ्रंश से ही हुआ है।

चारण कवि

"**चारण**" शब्द का अर्थ है "**स्तुतिगान**" अथवा "**प्रशंसागान**"। वीरगाथा काल में जो कवि राज-दरबारों में रहते थे और अपने राजाओं को जोश भरी कविताएँ सुनाते थे उनको चारण कवि कहा जाता था। ये कवि अपने राजाओं को हमेशा युद्ध के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे। यही चारण कवियों का वास्तविक कार्य था। ये कवि युद्धों में भी राजाओं के साथ रहते थे और आवश्यकता पड़ने पर खुद भी युद्ध करते थे।

महाकाव्य

"**महाकाव्य**" **प्रबंध-काव्य** का एक रूप है। "**प्रबंध**" का अर्थ है बँधा हुआ सिलसिले वार। प्रबंध काव्य में नायक-नायिका के जीवन की कथा होती है और यह अनेक खंडों में विभाजित रहता है। इसमें किसी नायक के जीवन की पूरी कथा होती है कुछ प्रबंध काव्यों में पूरे जीवन की कथा न होकर किसी घटना या उस नायक के जीवन के किसी एक पक्ष पर काव्य रचना की जाती है। इसे "खंड काव्य' कहते हैं। तुलसीदास का "**रामचरित मानस**", चंदबरदाई का "**पृथ्वीराज रासो**" तथा जय-

शंकर प्रसाद का "**कामायनी**" महाकाव्य है। जबकि मैथिलीशरण गुप्त की रचना "**जयद्रथ वध**' और दिनकर की रचना "**कुरुक्षेत्र**" खंड काव्य हैं।

संवत्

जिस तरह से ईसा के जन्म के बाद के वर्षों को "**ईसवी सन्**" या केवल "**सन्**" से दिखाया जाता है उसी तरह भारत में राजा विक्रमादित्य के बाद का समय "**विक्रम् संवत्**" से नाम से गिना जाता है। उदाहरण के लिए संवत् 1057 का अर्थ है विक्रमादित्य के समय के 1057 वर्ष बाद विक्रम संवत् तथा सन् में लगभग 57 वर्ष का अंतर होता है। यदि "विक्रम संवत् में से 57 वर्ष कम कर दिए जाएँ तो "सन्" की संख्या प्राप्त हो जाती है। उदाहरण के लिए इस समय विक्रम संवत् 2045 है। इसमें 57 वर्ष घटाने से (2045–57=1988) वर्तमान सन् 1988 निकलता है। इसी प्रकार यदि आज (1988 ई०) आपको विक्रम संवत् जानना हो तो 1988 में 57 वर्ष जोड़ने पर आप वर्तमान विक्रम संवत् (2045) जान सकते हैं।

अभ्यास

1. नीचे दिए गए कथनों पर सही (√) अथवा गलत (×) का निशान लगाइए।

   (क) आदिकाल का सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ "पृथ्वीराज रासो" है। ( )

   (ख) पृथ्वीराज रासो में वीर रस के साथ श्रृंगार रस का वर्णन नहीं है। ( )

   (ग) हिंदी साहित्य का आरंभ वीरगाथा काल से होता है। ( )

   (घ वीरगाथा काल के रासो ग्रंथों में इतिहास की सच्ची घटनाएँ अधिक हैं। ( )

2. नीचे कुछ कवियों के नाम दिए गए हैं और नीचे कोष्ठक में उनकी रचनाएँ दी गई हैं। कोष्ठक में से रचना चुनकर कवि के नाम के सामने लिखिए—

   (क) अमीर खुसरो ....

   (ख) नरपति नाल्ह ....

   (ग) जगनिक ....

   (घ, चंदबरदाई ....

   (पृथ्वीराज रासो, परमाल रासो या आल्हा खंड, बीसलदेव रासो पहेलियाँ)।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

   (क) आधुनिक हिंदी भाषा का विकास.................................भाषा से हुआ है।

   (ख) पृथ्वीराज रासो में कवि ने ....की वीरता का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया है।

   (ग) आदिकाल का समय.................से.................तक माना जाता है।

पाठ–3

निर्गुण भक्ति-धारा

भक्तिकाल एवं उसकी विभिन्न धाराएँ, निर्गुण भक्ति-धारा की शाखाएँ (ज्ञानमार्गी एवं प्रेममार्गी) और उनके प्रमुख कवि

अध्यापक : पिछले पाठ में आपने आदिकाल के बारे में पढ़ा था। आदिकाल के बाद भक्तिकाल आता है। इस काल में अधिकतर भक्ति साहित्य ही लिखा गया है।

छात्र : सर ! भक्तिकाल का समय कब से कब तक माना जाता है ?

अध्यापक : भक्तिकाल का आरंभ संवत् 1375 से माना जाता है। इस समय तक आदिकालीन साहित्य की धारा कमजोर होने लगी थी और भक्ति साहित्य लिखा जाने लगा था। भक्तिकाल की यह धारा संवत् 1700 तक मानी जाती है।

छात्र : सर ! हमने हिंदी के बहुत से प्रसिद्ध भक्तों जैसे –कबीर, सूर, तुलसी आदि के नाम सुने हैं, तो क्या इन लोगों का साहित्य एक ही प्रकार का है ?

अध्यापक : भक्त कवि भक्ति की ही कविता लिखते थे लेकिन इन सबकी भक्ति की पद्धति, अर्थात् भक्ति करने के तरीकों में अंतर था। इनमें से कुछ भक्त मानते थे कि भगवान का कोई रूप-रंग-आकार अर्थात् गुण नहीं होता। वह (ईश्वर) निर्गुण है, इन भक्तों को निर्गुण भक्त कहते हैं। दूसरे भक्त यह मानते हैं कि भगवान का बहुत सुंदर रूप होता है और उसमें श्रेष्ठतम गुण होते हैं। भगवान अपने भक्तों से प्रसन्न होते हैं। वे भक्तों की सहायता करते हैं और संसार में जन्म भी लेते हैं। इस प्रकार से ईश्वर की भक्ति करने वाले कवियों को "**सगुण भक्त**" कहा जाता है।

छात्र : तब तो निर्गुण भक्तों और सगुण भक्तों की भक्ति करने के तरीकों में भी अंतर होगा।

अध्यापक : हाँ दोनों में काफी अंतर है। सगुण भक्तों का भगवान तो रूप और आकार वाला है, वह अवतारों के रूप में देखा जा सकता है। सगुण भक्त उससे प्रेम करते हैं और उनका प्रेम बड़ा ही स्वाभाविक लगता है। भगवान का प्रेम प्राप्त करना ही उनका उद्देश्य होता है। लेकिन निर्गुण भक्तों का प्रेम तो बिना ईश्वर के रूप-रंग, आकार वाले भगवान के लिए होता है। निर्गुण भक्त प्रेम की अपेक्षा ज्ञान के द्वारा ईश्वर को जानने पर अधिक बल देते हैं।

छात्र पहला : क्या सभी निर्गुण भक्त ज्ञान पर बल देते हैं ?

छात्र दूसरा : सर ! यह भी बताइए कि ज्ञान प्राप्त करने से क्या मतलब है ?

अध्यापक : ज्ञान प्राप्त करने का मतलब है यह जानना कि मनुष्य (या जीव) और ईश्वर (या ब्रह्म) एक हैं और यह संसार सच्चा नहीं है। लेकिन सभी निर्गुण भक्त ज्ञान को इतना महत्व नहीं देते। कुछ निर्गुण भक्त ज्ञान

की अपेक्षा प्रेम को महत्व देते हैं। जो भक्त ज्ञान को महत्व देते हैं वे "ज्ञानमार्गी" कहे जाते हैं और जो ज्ञान की तुलना में प्रेम को महत्व देते हैं उनको "प्रेममार्गी" कहा जाता है। कबीरदास ज्ञानमार्गी भक्त हैं और जायसी प्रेममार्गी भक्त।

छात्र पहला : सर ! आपने इन निर्गुण भक्तों में कबीर तथा जायसी के नाम बताए, दूसरे कुछ भक्त कवियों के नाम भी बताइए।

छात्र दूसरा : सर ! इन कवियों की रचनाओं के नाम भी बताइएगा।

अध्यापक : कबीर का पूरा नाम कबीरदास तथा जायसी का पूरा नाम है मलिक मोहम्मद जायसी। कबीर के ग्रंथ का नाम है "बीजक" तथा जायसी की मुख्य रचना है "पद्मावत"। इस धारा के कुछ अन्य कवि और उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं। कबीरदास के अलावा ज्ञानमार्गी शाखा के अन्य मुख्य कवि हैं रैदास और गुरुनानक देव। रैदास की रचना "रैदास बानी" है और गुरुनानक देव की रचनाएँ "गुरुग्रंथ साहब" में संगृहीत हैं। गुरु ग्रंथ साहब में गुरु नानक देव के अलावा कई अन्य कवियों की कविताएं भी हैं। प्रेममार्गी कवियों में जायसी के अलावा मंझन और मुल्ला दाऊद के नाम प्रसिद्ध हैं। मंझन ने **"मधुमालती"** नाम की रचना लिखी है और मुल्ला दाऊद की रचना है **"चंदायन"**।

छात्र : सर ! निर्गुण भक्तों की कविता की कौन-कौन सी प्रमुख विशेषताएँ हैं ?

अध्यापक : यों तो बहुत-सी विशेषताएँ हैं। लेकिन निम्नलिखित विशेषताओं का आप ध्यान रखिए।

1. ये सभी भक्त ईश्वर को सत्य और जगत को मिथ्या मानते थे। ये भक्त सभी मनुष्यों को समान समझते थे। इनके लिए न कोई

छोटा था न बड़ा । इसलिए इन लोगों ने जाति-पाँति, ऊँच-नीच के भेदभाव का विरोध किया ।

2. ये सभी भक्त मानते थे कि ईश्वर एक है । उसका नाम चाहे जो भी हो, उसकी भक्ति के लिए बाहरी आडंबर की जरूरत नहीं है ।

3. सभी भक्त वास्तव में साधु-संत थे तथा एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहते थे और भजन गाते-सुनाते रहते थे । इनकी भषा में जगह-जगह के (खासकर ब्रज, अवधी, राजस्थानी, पंजाबी आदि भाषाओं **के**) शब्द आ गए हैं । इसीलिए इनकी भाषा को "**खिचड़ी भाषा**" कहते हैं ।

छात्र : अब हमें एक-दो प्रमुख निर्गुण भक्त कवियों के जीवन के विषय में कुछ बताइए ।

अध्यापक : मैं आपको कबीरदास तथा जायसी के विषय में कुछ बताऊँगा । कबीर ने बहुत से पद और दोहे लिखे हैं । ये सब "बीजक" नामक ग्रंथ में हैं । "बीजक" के तीन भाग हैं—साखी, सबद और रमैनी । कहते हैं कि कबीर का जन्म किसी हिंदू स्त्री से हुआ था और उनका पालन-पोषण मुसलमान परिवार में हुआ था । कबीर हमेशा धर्म के बाहरी आडंबर जैसे जप-तप, नमाज़-रोज़ा आदि सबका विरोध करते । कबीर स्वामी रामानन्द जी को अपना गुरू मानते थे ।

छात्र : सर ! अब हमें कबीर की कविता की कुछ विशेषताएँ बताइए ?

अध्यापक :

1. कबीर ईश्वर को निराकार अर्थात् बिना आकार का मानते हैं ।

2. कबीर मानते हैं कि इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए भगवान की भक्ति करना बहुत जरूरी है ।

3. कबीर ने जाति-पाँति, ऊँच-नीच सबका विरोध किया था । वे बाहरी आडंबरों या दिखावों में विश्वास नहीं करते थे ।

4 कबीर मानते हैं कि ईश्वर की प्राप्ति ज्ञान से ही हो सकती है।

5. कबीर की भाषा सरल है। उसमें अनेक भाषाओं के शब्द आ गए हैं, क्योंकि कबीर सदा एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहते थे।

छात्र : सर ! जायसी के विषय में भी कुछ बताइए ?

अध्यापक : सूफ़ी कवियों में जायसी का स्थान सबसे प्रमुख है। जायसी जायस नगर में पैदा हुए थे। इनके माता-पिता की मृत्यु बचपन में ही हो गई थी इसलिए इनका पालन-पोषण साधुओं और फकीरों के बीच हुआ। जायसी की तीन रचनाएँ हैं। (1) आखिरी कलाम (2) पद्मावत् तथा (3) अखरावट।

छात्र : सर ! इन तीनों में सबसे अधिक प्रसिद्ध रचना कौन सी है ?

अध्यापक : इन सब में "पद्मावत" प्रमुख रचना है। इसमें राजा रत्नसेन तथा रानी पद्मावती के प्रेम का वर्णन है। इस ग्रथ की भाषा अवधी है।

छात्र : सर ! जायसी के काव्य की कुछ विशेषताएँ भी बताइए ?

अध्यापक : जायसी की कविता की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

1. कबीर की तरह जायसी ने भी गुरु को अधिक महत्व दिया है। जायसी मानते हैं कि गुरु या पीर साहब की कृपा से ही शैतान का नाश होता है।
2. जायसी ने प्रेम को बहुत महत्व दिया है।
3. जायसी भी प्रेम के द्वारा निराकार ईश्वर को प्राप्त करने की बात कहते हैं। इसलिए वे भी कबीर की तरह रहस्यवादी कवि हैं।
4. जायसी के काव्य की भाषा सामान्य बोल-चाल की अवधी भाषा है।

टिप्पणियाँ

अवधी-भाषा

अवधी हिंदी की एक बोली है जो पुराने अवध प्रदेश (अर्थात् आज के लखनऊ, मिर्जापुर, फैजाबाद) के आस-पास में बोली जाती है । तुलसी का "**रामचरित मानस**" और जायसी का "**पद्मावत**" अवधी भाषा में हैं ।

खिचड़ी भाषा

जिस तरह खिचड़ी में दाल-चावल मिले रहते हैं उसी तरह से जब किसी भाषा में एक से अधिक भाषाओं के शब्द मिल जाएँ तब उसे खिचड़ी भाषा कहा जाता है ।

दोहा

दोहा एक प्रकार का छंद (काव्य रचना की पद्धति) है जिसमें चार चरण होते हैं । पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ और दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं ।

रोज़ा

मुसलमानों द्वारा किया जाने वाला एक महीने का उपवास । मुसलमान लोग रोज़ा रखते हैं । रोज़े के दिनों में वे सुबह सूरज निकलने से शाम को सूरज डूबने तक कुछ भी नहीं खाते-पीते ।

पंजाबी भाषा

पंजाब प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा ।

पद

काव्य-रचना का एक विशेष ढंग । "पद" गेय होते हैं । सूरदास और मीराबाई के पद बहुत प्रसिद्ध हैं ।

ब्रज-प्रदेश

मथुरा, आगरा के आस-पास का क्षेत्र । यहाँ ब्रज भाषा बोली जाती हैं । इसी प्रदेश में भगवान कृष्ण का जन्म हुआ था ।

अभ्यास

1. नीचे कुछ रचनाकारों के नाम दिए गए हैं और कोष्ठक में उनकी रचनाएँ दी गई हैं। आप रचना और रचनाकार को एक दूसरे से मिला कर लिखिए—

(क) कबीरदास

(ख) जायसी

(ग) नानकदेव

(घ) मंझन

(ङ) रैदास

(पद्मावत्, गुरुग्रंथ साहब, बीजक, रैदास बानी, मधुमालती)

2. सही शब्द डालकर वाक्य पूरे कीजिए—

(क) ················ज्ञान मार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि थे।

(ख) जायसी················शाखा के प्रतिनिधि कवि थे।

(ग) कबीर की प्रसिद्ध रचना················है।

(घ) भक्तिकाल का समय················से················तक माना जाता है।

3. नीचे दिये हुए कथनों पर सही (√) अथवा गलत (×) का निशान लगाइए—

(क) भक्ति काल में वीर रस की कविताएँ अधिक लिखी गईं। ( )

(ख) निर्गुण भक्त भगवान के अवतार को मानते हैं। ( )

(ग) निर्गुण भक्तों ने प्रेम की अपेक्षा ज्ञान प्राप्त करने पर अधिक बल दिया। ( )

(घ) निर्गुण भक्त इस संसार को वास्तविक मानते हैं। ( )

(ङ) कबीरदास प्रेममार्गी भक्त कवि थे। ( )

पाठ–4

राम भक्ति शाखा

सगुण भक्ति एवं उसकी शाखाएँ (राम भक्ति शाखा और कृष्ण भक्ति शाखा), राम भक्ति शाखा और उसकी मुख्य विशेषताएँ, तुलसीदास और उनका रामचरित मानस

अध्यापक : पिछले पाठ में आपने पढ़ा कि कुछ भक्त कवि भगवान के सगुण-साकार रूप को मानते हैं। ये कवि मानते हैं कि भगवान पापियों का नाश करने के लिए संसार में जन्म लेते हैं और अपने भक्तों का कल्याण करते हैं।

छात्र : सर ! सगुण भक्त अपने भगवान में कौन से गुणों को मानते हैं ? क्या ये गुण मनुष्य या जीव में नहीं होते ?

अध्यापक : सगुण भक्त यह तो मानते हैं कि मनुष्य ईश्वर का ही अंश है। लेकिन ईश्वर में कुछ विशेष गुण हैं जो मनुष्य में नहीं होते। जैसे—ईश्वर जो कुछ चाहता है, सब कुछ कर सकता है, वह सर्वज्ञ है अर्थात् सब कुछ जानता है। भगवान भक्तों का ध्यान रखते हैं और वे भक्तों की सहायता के लिए मनुष्य का रूप धारण कर संसार में जन्म लेते हैं।

छात्र : निर्गुण भक्तों ने तो संसार को अवास्तविक या भ्रम बताया है। सगुण भक्त भी क्या संसार को अवास्तविक बताते हैं।

अध्यापक : नहीं, ऐसा नहीं है। सगुण भक्त कहते हैं कि जिस संसार में भगवान खुद आकर जन्म लेते हों, वह संसार अवास्तविक नहीं हो सकता। सगुण भक्त संसार को भी ईश्वर का ही रूप मानते हैं। उनका कहना है कि संसार तो भगवान का लीला-स्थल है।

छात्र : सगुण भक्त भगवान के किस अवतार की पूजा करते हैं ?

अध्यापक : सगुण भक्तों में दो वर्ग हैं। एक वर्ग के लोग "राम" के भक्त हैं और दूसरे वर्ग के लोग "कृष्ण" के भक्त। वैसे, राम और 'कृष्ण' दोनों ही भगवान विष्णु के अवतार हैं।

छात्र : सर ! राम भक्ति की विचारधारा किसने चलायी ?

अध्यापक . रामानुज नाम के एक बहुत बड़े दार्शनिक आचार्य थे। आचार्य रामानुज के बड़े प्रसिद्ध शिष्य थे रामानंद। उत्तर भारत में राम भक्ति की विचारधारा रामानंद जी ने ही चलाई थी।

छात्र : सर ! "राम" कौन थे ? उनके विषय में कुछ जानने की बहुत इच्छा है।

अध्यापक : राम, राजा दशरथ के पुत्र थे। उन्हें विष्णु भगवान का अवतार माना जाता है। राम भक्त मानते हैं कि "राम" असीम शक्ति, शील और सौंदर्य के स्वामी हैं। वे अपने सौंदर्य से सबको प्रसन्न करते हैं, अपनी शक्ति से पापियों का नाश करते हैं और अपने शील से अच्छे आचार-विचार की प्रेरणा देते हैं।

छात्र : राम भक्ति शाखा के मुख्य कवि कौन हैं ?

अध्यापक : यों तो अनेक राम भक्त कवि हुए हैं, लेकिन उन सब में गोस्वामी तुलसीदास का नाम सबसे प्रसिद्ध है। उनका **"रामचरितमानस"** सारे संसार में प्रसिद्ध है।

छात्र : सर ! हमने तुलसी के रामचरितमानस का नाम तो सुना है लेकिन उनके दूसरे प्रसिद्ध ग्रंथ कौन-से हैं उनका परिचय भी दीजिए ?

अध्यापक : रामचरितमानस के अतिरिक्त दूसरे प्रसिद्ध ग्रंथ हैं—

कवितावली

दोहावली

विनयपत्रिका

छात्र : सर ! क्या तुलसीदास की सभी रचनाओं की भाषा एक सी ही है ?

अध्यापक : नहीं ! तुलसी ने रामचरितमानस तो अवधी भाषा में लिखा है तथा कवितावली, दोहावली और विनयपत्रिका ब्रज भाषा में लिखी हैं।

छात्र : सर ! आप हमें रामचरितमानस के बारे में कुछ विस्तार से बताने की कृपा करेंगे ?

अध्यापक : क्यों नहीं। सारे हिंदी साहित्य में रामचरितमानस का विशेष स्थान है। इसका अनुवाद भी संसार की कई भाषाओं में हो चुका है। इसमें भगवान राम के जीवन की कथा है।

छात्र : सर ! आप रामचरितमानस की कहानी संक्षेप में बताने की कृपा करेंगे ?

अध्यापक : प्राचीन काल में अयोध्या में राजा दशरथ राज्य करते थे। उनकी तीन रानियाँ थीं। उनके नाम थे कौशल्या, ककेयी और सुमित्रा। उनके चार पुत्र थे– राम, लक्ष्मण भरत, और शत्रुघ्न। राम का

विवाह सीता के साथ हुआ था। दशरथ राम को अयोध्या का राजा बनाना चाहते थे। लेकिन अपनी दूसरी पत्नी कैकेयी के कारण उन्होंने भरत को राजा बनाया तथा राम को चौदह वर्षों का वनवास दिया। राम के साथ सीता तथा लक्ष्मण भी वन को गए। वन में एक दिन सीता को लंका का राजा रावण चुरा ले गया। राम ने रावण के साथ युद्ध किया। इस युद्ध में वानरों के राजा सुग्रीव और उसके मंत्री हनुमान ने अपनी सेना सहित राम की सहायता की। युद्ध में रावण मारा गया और चौदह वर्ष के बाद राम अपने भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ अयोध्या लौट आए।

टिप्पणियाँ

अवतार

भगवान का संसार में आकर मनुष्य रूप में जन्म लेना ही "**अवतार**" कहलाता है। भक्त मानते हैं कि भगवान अपने भक्तों की सहायता तथा अधर्म का नाश करने के लिए अवतार के रूप में आते हैं।

जीव

भारतीय दर्शन-शास्त्र में संसार के समस्त प्राणियों को जीव या जीवात्मा कहा गया है। अधिकतर दार्शनिक यह मानते हैं कि "**जीवात्मा**" "**परमात्मा**" (ईश्वर) का ही अंश है। तुलसीदास ने भी यही बात इस प्रकार कही "**ईश्वर**" अंश जीव अविनाशी।

जीव ईश्वर का अंश है तथा अविनाशी है अर्थात् यह कभी नष्ट नहीं होता।

भगवान विष्णु

भारतीय पुराणों में भगवान के तीन कार्य-रूपों की कल्पना की गई है। ये हैं ब्रह्मा विष्णु और महेश या शिव। यह माना जाता है कि ब्रह्मा संसार को पैदा करते, हैं। विष्णु संसार का पालन-पोषण करते हैं तथा शिव संसार का विनाश करते हैं। ईश्वर भक्त मानते हैं कि जब-जब संसार में अधर्म बढ़ता है और मनुष्यों पर अत्याचार होते हैं तो भगवान विष्णु "**अवतार**" के रूप में संसार में जन्म लेते हैं। जैसे राम, कृष्ण आदि।

भ्रम

भ्रम का अर्थ है "**अज्ञान**"। भ्रम को ही दर्शन में "**माया**" भी कहा गया है। यह माना जाता है कि संसार में आया हुआ "**जीव**" भ्रम या "**माया**" में फँसा रहता है। इसी भ्रम (या माया) का नाश होने पर जीव और ईश्वर में अंतर समाप्त हो जाता है।

लीला-स्थल

"लीला" शब्द का अर्थ है भगवान की क्रीड़ाएँ या खेल। भगवान संसार में अवतार लेकर तरह-तरह की क्रीड़ाएँ करते हैं। यही उनकी लीलाएँ हैं। **"स्थल"** का अर्थ है **"स्थान"**। भगवान का "लीला-स्थल" वास्तव में यह संसार है जहाँ आकर वे अवतार लेने के बाद तरह-तरह की लीलाएँ करते हैं।

साकार

"साकार" शब्द का अर्थ है **"आकार सहित"**। सगुण भक्त मानते हैं कि भगवान संसार में आकर अथवा रूप लेकर आते हैं। इसी साकार रूप को भगवान का अवतार कहा गया है। भगवान के इस साकार रूप में भक्तों ने अनेक गुणों की कल्पना की है। इसलिए इन भक्तों को सगुण भक्त कहते हैं।

अभ्यास

1. नीचे दिए गए कथनों पर सही (√) अथवा गलत (×) का निशान लगाइए—

   (क) सगुण भक्त कवि भगवान के साकार रूप को मानते हैं।

   (ख) निर्गुण भक्तों ने संसार को अवास्तविक बताया है।

   (ग) रामानंद, आचार्य रामानुज के शिष्य थे।

   (घ) विनय पत्रिका अवधी भाषा में लिखी गई है।

   (ङ) सगुण भक्त जीव को ईश्वर का अंश नहीं मानते हैं।

2. सही शब्द डालकर वाक्य पूरे कीजिए—

   (क) गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस ....भाषा में लिखा है।

   (ख) राम और कृष्ण दोनों ही भगवान विष्णु के........................हैं।

   (ग) रामचरितमानस में........................के जीवन की कथा है।

   (घ) राजा दशरथ के चार पुत्र थे राम, लक्ष्मण ...... और.... ....।

   (ङ) सीता को एक दिन लंका का राजा .... चुराकर ले गया।

पाठ–5

कृष्ण भक्ति शाखा

कृष्ण भक्ति धारा और उसकी मुख्य विशेषताएँ,
सूरदास एवं अष्ट छाप के कवि

अध्यापक : पिछले पाठ में आपने सगुण भक्ति धारा की राम भक्ति शाखा के बारे में पढ़ा था। इस पाठ में आप सगुण भक्ति की दूसरी शाखा के विषय में पढ़ेंगे। यह है कृष्ण भक्ति शाखा। इस शाखा के कवि विष्णु भगवान के अवतार "कृष्ण" के भक्त हैं। सूरदास जी इस शाखा के प्रमुख कवि हैं।

छात्र : सर! जब "राम" और "कृष्ण" दोनों ही विष्णु के अवतार हैं तो दोनों में क्या अंतर है?

अध्यापक : दोनों में अंतर है, और यह भक्ति की भावना का अंतर है। राम भक्त अपने को राम का "सेवक" या "दास" समझते हैं जबकि कृष्ण भक्त कृष्ण को अपना "सखा" समझते हैं। राम भक्तों की दृष्टि से भक्त और भगवान के बीच मर्यादा का भाव रहता है जबकि कृष्ण भक्तों की दृष्टि से भक्त और भगवान के बीच प्रेमी-प्रेमिका का भाव रहता

है । कृष्ण भक्त मानते हैं कि भक्त को पूरी तरह से भगवान के आगे समर्पण करना चाहिए ।

छात्र : सर ! भक्त का भगवान के प्रति पूरी तरह से समर्पण किस तरह होता है ?

अध्यापक : कृष्ण भक्त यह मानते हैं कि भक्त जीवन में जो भी काम करें, वे सभी कार्य भगवान को प्रसन्न करने के लिए ही होने चाहिए । भक्त को अपने लिए कुछ करने की ज़रूरत नहीं है । भगवान खुद भक्त की देख-रेख करेंगे । भक्त की दशा तो बिल्ली के बच्चे की तरह होनी चाहिए । बिल्ली का बच्चा जन्म लेने के बाद खुद कुछ नहीं करता । वह आँखें बंद किए पड़ा रहता है । जिस तरह से बिल्ली उसके भोजन और सुरक्षा की व्यवस्था करती है, उसे अपने मुंह से पकड़ कर एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है, उसी तरह भगवान भी अपने भक्तों की देख-भाल करता है । सूरदास जी भी इन्हीं बातों को मानने वाले कवि हैं ।

एक छात्र : सर ! सूरदास जी कौन थे ? पहले तो हमें उनके विषय में कुछ बताइए ?

दूसरा छात्र : सर ! मैंने सुना है कि सूरदास जी जन्म से ही अंधे थे । क्या यह बात सच है ?

अध्यापक : यह बात तो सच है कि सूरदास अंधे थे । लेकिन वे जन्म से ही अंधे थे या बाद में अंधे हुए, यह बात निश्चित रूप से बताना कठिन है । सूर-दास जी ने कृष्ण-प्रेम के अनेक पद लिखे थे । इन पदों की संख्या सवा लाख कही जाती है । लेकिन इस समय "**सूर सागर**" नामक ग्रंथ में सूर के लगभग पाँच हजार पद ही मिलते हैं । सूरदास की दूसरी प्रसिद्ध रचना का नाम "**सूर सारावली**" है ।

छात्र : सर ! सूरदास के पद तो गाए जाते हैं। रेडियो पर भी हमने उनके पद सुने हैं । क्या सूरदास जी भी इन पदों को कहीं गाया करते थे ।

अध्यापक : हाँ ! सूरदास जी तथा इनके अन्य सात साथी बड़े अच्छे गायक थे । ये आठों कवि बारी-बारी से श्रीनाथ जी के मंदिर में कृष्ण लीला के पद गा-गा कर सुनाया करते थे । ये आठों भक्त "**अष्ट-छाप**" के भक्त कवि कहे जाते हैं ।

अध्यापक : सूरदास तथा उनके अन्य साथियों पर आचार्य वल्लभ के विचारों का बड़ा प्रभाव है । आचार्य वल्लभ के पुत्र थे गोस्वामी विट्ठलनाथ । गोस्वामी विट्ठलनाथ ने अपने पिता की मृत्यु के बाद उनके 84 शिष्यों में से चार शिष्य और अपने 252 शिष्यों में से चार शिष्य लेकर आठ भक्तों की एक मंडली बनाई । इस मंडली का काम था भगवान की लीलाओं के सुंदर-सुंदर पदों की रचना करना तथा उन पदों को मंदिर के कीर्तनों में गाना । ये आठ भक्त कवि ही अष्टछापी कवि कहे जाते हैं ।

छात्र : सर ! सूरदास जी के अलावा अष्ट-छाप में दूसरे कौन-कौन कवि थे ?

अध्यापक : अष्ट-छाप के प्रमुख कवि तो सूररास जी हैं । सूरदास के अलावा अष्ट-छाप के अन्य कवियों के नाम हैं—

कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, गोविंद स्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास ।

टिप्पणियाँ

अष्ट-छाप

अष्ट छाप का अर्थ है आठ। अष्ट-छाप में सूरदास आदि आठ कृष्ण भक्त कवियों के नाम आते हैं। इन आठों ही कवियों ने बड़े ही सुंदर काव्य की रचना की है। वल्लभ संप्रदाय में इन आठों कवियों की मंडली को **"अष्ट सखा"** या **"आठ सखा"** भी कहा जाता है। संप्रदाय की दृष्टि से आठों कवि कृष्ण भगवान के सखा या साथी हैं।

आचार्य वल्लभ के पुत्र श्री गुसाईं विट्ठलनाथ ने संवत् 1602 के लगभग अपने पिता के चौरासी शिष्यों में से चार तथा अपने 252 शिष्यों में से चार को लेकर कुल आठ कवियों की एक मंडली बनाई। इस मंडली में वल्लभाचार्य के चार शिष्य थे—कुंभनदास, परमानंददास, सूरदास तथा कृष्णदास। गुसाईं, विट्ठलनाथ के शिष्य थे—गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास तथा नन्ददास।

आचार्य वल्लभ

आचार्य वल्लभ ने **"पुष्टि मार्ग"** का आरंभ किया था। ये दार्शनिक आचार्य थे। इन्होंने जो दार्शनिक सिद्धांत रखा उसका नाम है **"शुद्धाद्वैतवाद"**। यह शब्द शुद्ध अद्वैतवाद से मिलकर बना है। **"अद्वैत"** का अर्थ है जहाँ दो न हों अर्थात् ईश्वर और जीव दोनों एक ही हैं। दोनों में "अद्वैत" है। लेकिन वल्लभाचार्य ने अपने ईश्वर में कुछ ऐसे गुण माने जो जीव में नहीं होते। **"जीव"** पर माया या भ्रम का प्रभाव पड़ सकता है, लेकिन ईश्वर या ब्रह्म पर नहीं। इसलिए ब्रह्म शुद्ध है। आग में से जैसे चिनगारियाँ निकलती हैं और उसी में लीन हो जाती हैं उसी तरह से ब्रह्म में से जीव निकलते हैं और उसी में लीन हो जाते हैं।

श्रीनाथ का मंदिर

श्रीनाथ का यहाँ अर्थ है श्रीकृष्ण। सूरदास जी को उनके गुरु आचार्य वल्लभ ने आज्ञा दी थी कि कृष्ण की लीलाओं पर "पद" लिखें। सूरदास जी वल्लभाचार्य की आज्ञा से श्रीनाथ मंदिर में कीर्तन करने लगे थे और रोज़ाना सुंदर पद गाया करते थे। श्रीनाथ जी के मंदिर से कुछ दूरी पर पारसौली नामक स्थान में वे रहा करते थे।

अभ्यास

1. नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं उनमें से सही पर (√) का निशान और गलत पर (×) का निशान लगाइए—

    (क) सगुण भक्ति धारा को प्रमुख रूप से चार भागों में बाँटा जाता है।

    (ख) राम भक्त अपने को राम का सखा मानते हैं।

    (ग) कृष्ण भक्त अपने को कृष्ण का दास (सेवक) मानते हैं।

    (घ) कृष्ण भक्ति का मूल भाव समर्पण भाव है।

    (ङ) अष्टछाप के भक्त कवियों की संख्या दस है।

    (च) "सूर सागर" ब्रज भाषा में लिखा हुआ है।

    (छ) सूरदास आचार्य वल्लभ के शिष्य थे।

    (ज) गोस्वामी विट्ठलनाथ आचार्य वल्लभ के पुत्र थे।

    (झ) अष्टछाप के प्रमुख कवि कृष्णदास थे।

    (ञ) भक्त कवि महात्मा सूरदास का मुख्य उद्देश्य सगुण-भक्ति की स्थापना और निर्गुण भक्ति का मज़ाक बनाना था।

2. निम्नलिखित वाक्यों को कोष्ठक में दिए गए शब्दों में उपयुक्त शब्द चुन-कर पूरा कीजिए—

    (क) कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि.............. हैं।
    (नंददास, कृष्णदास, सूरदास)

    (ख) राम भक्ति में भगवान भक्त के बीच का..............भाव रहता है।
    (मर्यादा, प्रेमी, प्रेमिका, सेवक)

    (ग) कृष्ण भक्तों और राम भक्तों की भावना में..............।
    (कोई अंतर नहीं है, अंतर है)

    (घ) अष्ट छाप के कवि बारी-बारी से....................के मंदिर में पद गाकर सुनाया करते थे। (द्वारिकाधीश, रंगेश्वर, श्रीनाथ)

पाठ–6

रीतिकालीन काव्य

रीतिकालीन काव्य एवं उसकी विशेषताएँ रीतिकाल के मुख्य कवि एवं उनको रचनाएँ

अध्यापक : पहले पाठ में आपको बताया गया था कि हिंदी साहित्य के इतिहास के तीसरे काल को "**रीतिकाल या शृंगार काल**" कहा जाता है। आज हम इस काल का अध्ययन करेंगे।

पहला छात्र : सर ! पहले हमें यह बताइए कि इस काल का समय कब से कब तक है ?

दूसरा छात्र : सर ! एक बार फिर से यह भी बताइए कि इस काल को रीतिकाल क्यों कहते हैं ?

अध्यापक : रीतिकाल का समय 1700 से 1900 तक माना जाता है। संस्कृत भाषा में कुछ ऐसे ग्रंथ लिखे गए हैं जिनमें पहले कविता लिखने की रीति या नियम समझाए गए हैं फिर उदाहरण के रूप में उसके नियम के अनुसार कविता लिखी गयी है। ऐसे ग्रथों को "**रीति ग्रंथ**" कहते हैं। इसी पद्धति के अनुसार इस काल में बहुत सी रचनाएँ लिखी गयीं इसलिए इस काल को "**रीति काल**" कहा गया है।

छात्र : सर ! क्या रीतिकाल के सभी कवियों ने इसी प्रकार की रचनाएँ की हैं।

अध्यापक : नहीं इस काल के सभी कवियों ने इस पद्धति के अनुसार रचनाएँ नहीं की हैं लेकिन इस काल के अधिकतर कवियों ने इसी तरह की रचनाएँ की हैं।

छात्र : सर ! रीतिकाल के कवियों की एक विशेषता तो थी रीति या नियम के आधार पर कविता लिखना। इस काल की और विशेषताएँ क्या हैं ?

अध्यापक : इस काल की कविताओं की एक दूसरी मुख्य विशेषता है नारी के शरीर की सुंदरता का वर्णन करना। इसके सिवाय प्रेम अर्थात् शृंगार का अधिक वर्णन भी इस काल के काव्य की विशेषता है। इसीलिए इस काल को "**शृंगार काल**" भी कहा जाता है।

छात्र : सर ! इस काल के काव्य की और क्या विशेषताएँ हैं ?

अध्यापक : इस काल के कवियों ने अपनी कविता के लिए ब्रज भाषा को चुना और मुख्य रूप से "**मुक्तक काव्य**" की रचना की।

छात्र : सर ! रीतिकाल के कुछ प्रमुख कवियों तथा उनकी रचनाओं के नाम बताने की कृपा करें।

अध्यापक : रीतिकाल के प्रमुख कवि थे केशव, बिहारी, घनानंद, देव और भूषण। केशव ने "**रामचंद्रिका**" की रचना की थी और बिहारी की रचना "**बिहारी सतसई**" है। "**सुजान सागर**" घनानंद की रचना है और देव की रचनाएँ हैं "**शब्द रसायन**" और भाव विलास। भूषण की कविता में शृंगार के साथ वीर रस भी है। उनकी रचनाओं के नाम हैं "**शिवा बावनी**" और "**शिवराज भूषण**"

छात्र : इन कवियों में सबसे प्रमुख कवि कौन है ? उसके विषय में कुछ बताने की कृपा करें ।

अध्यापक : यों तो इन सभी कवियों का अपना विशिष्ट स्थान है । कुछ लोग केशवदास को कुछ लोग घनानंद को और बहुत से लोग बिहारी को इस काल का प्रमुख कवि मानते हैं ।

छात्र : सर ! बिहारी के बारे में कुछ बताइए ।

अध्यापक : बिहारी जयपुर के राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे । बिहारी ने एक ग्रंथ की रचना की जिसे "**बिहारी सतसई**" कहते हैं । "**सतसई**" का अर्थ है सात सौ । इस ग्रंथ में लगभग सात सौ दोहे हैं । अतः इसका नाम "**सतसई**" पड़ा ।

छात्र : सर ! बिहारी की कविताओं को क्या-क्या विशेषताएँ हैं ?

अध्यापक : बिहारी की कविता शृंगार प्रधान कविता है । उसमें प्रेमी-प्रेमिका के मिलन का अधिक वर्णन किया है । बिहारी की कविता में उनकी कल्पना का चमत्कार देखने को मिलता है बिहारी की सबसे बड़ी विशेषता उनकी भाषा की है । बिहारी थोड़े से शब्दों में बड़ी से बड़ी बात कहते हैं । बिहारी की भाषा ब्रज भाषा है ।

छात्र : सर ! क्या आप इस काल के कुछ दूसरे कवियों का भी परिचय देंगे ?

अध्यापक : बिहारी के अलावा इस काल के दूसरे मुख्य कवि हैं केशव, देव तथा घनानंद ।

छात्र : सर ! तब आप हमें इन तीनों ही कवियों तथा उनकी कविता के विषय में कुछ बताइए ।

अध्यापक : सबसे पहले मैं आपको केशव के बारे में बताता हूँ। हिंदी साहित्य में आचार्य के रूप में केशव का बड़ा नाम है। केशव के मुख्यग्रंथ हैं रसिक-प्रिया, कविप्रिया तथा रामचंद्रिका। "**रामचंद्रिका**" राम के जीवन को आधार बनाकर लिखा गया महाकाव्य है। केशव की कविता में अलंकारों का बहुत ज्यादा प्रयोग हुआ है, इसीलिए उनकी कविता काफी कठिन हो गई है।

देव के ग्रंथों की संख्या लगभग 72 है। देव मुख्यतः श्रृंगार रस के कबि हैं। देव की कविता में शब्दों का चयन बहुत सुंदर है।

घनानंद की कविता में श्रृंगार या प्रेम का बड़ा सुंदर वर्णन है। घनानंद ने रीति पद्धति से हटकर कविता लिखी है। इसीलिए घनानंद को "रीतिमुक्त" कवि कहा जाता है। इनके ग्रंथों में "**सुजान सागर**", "**विरह लीला**" आदि प्रसिद्ध हैं। उनकी कविता में ब्रज-भाषा का बड़ा ही सुंदर रूप देखने को मिलता है।

अभ्यास

1. नीचे कुछ कवियों के नाम और कोष्ठक में उनकी रचनाओं के नाम दिए गए हैं। कवि के साथ उसकी रचना का नाम मिलाकर लिखिए—

   (क) केशव ....

   (ख) बिहारी ....

   (ग) घनानंद ....

   (घ) भूषण ....

   (सुजान सागर, रामचंद्रिका, शिवा बावनी, बिहारी सतसई)

2. नीचे दिए गए कथनों पर सही (√) अथवा गलत (×) का निशान लगाइए--

   (क) रीतिकाल का समय संवत् 1900 से माना जाता है। ( )

   (ख) रीतिकाल के सभी कवियों ने रीति-ग्रंथों की रचना की है। ( )

   (ग) रीतिकाल में श्रृंगार का वर्णन सबसे अधिक हुआ है। ( )

   (घ) रीतिकाल की भाषा खड़ी बोली थी। ( )

   (ङ) रीतिकाल में अधिकांश रूप से मुक्तक काव्य लिखे गए। ( )

   (च) बिहारीलाल राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे। ( )

   (छ) बिहारी सतसई में सात हजार दोहों का संग्रह है। ( )

   (ज) बिहारी सतसई अवधी भाषा में लिखी गई है। ( )

3. कोष्ठक में दिए हुए शब्दों में से उपयुक्त शब्द डालकर वाक्य पूरे कीजिए–

   (क) बिहारी..............के प्रसिद्ध कवि हैं। (आदिकाल, रीतिकाल, भक्तिकाल)

   (ख) रीतिकाल..............के बाद आता है। (आदिकाल, भक्तिकाल, वीर गाथाकाल)

   (ग) रीतिकाल का दूसरा नाम..............है। (श्रृंगारकाल, प्रेमकाल, भक्तिकाल)

   (घ) हिंदी में रीति काव्य लिखने की परंपरा....... ....से आई है। (संस्कृत भाषा, फारसी भाषा, उर्दू भाषा)

पाठ—7

आधुनिक काल

आधुनिक काल के विभिन्न नामों का आधार, आधुनिक काल के विभिन्न युग-भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग, छायावादोत्तर युग।

अध्यापक : संवत् 1900 के बाद आधुनिक काल आरंभ होता है। इस काल में काव्य के अलावा गद्य में भी बहुत सी रचनाएँ लिखी गयीं, इसलिए कुछ लोग इस काल को "गद्यकाल" भी कहते हैं। इस काल के साहित्य में देश प्रेम और देश की आजादी की भावना ज्यादा है। इसलिए कुछ लोग इस काल को "स्वतंत्रता काल" भी कहते हैं।

यह काल दूसरे कालों की तुलना में बहुत व्यापक है। इसलिए इस काल के साहित्य का अध्ययन हम अलग-अलग युगों में बाँटकर करते हैं। ये युग हैं—भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग और छायावाद के बाद का युग अथवा छायावादोत्तर युग।

छात्र : सर ! पहले और दूसरे युगों के नामों से ऐसा लगता है कि ये व्यक्तियों के नाम हैं। अगर ये व्यक्तियों के नाम हैं तो उनके नाम पर इन युगों का नाम कैसे पड़ गया ?

अध्यापक : आपकी बात बिलकुल ठीक है। पहले युग का नाम हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार "भारतेंदु हरिश्चंद्र" के नाम पर और दूसरे युग का नाम आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर रखा गया है।

छात्र : सर ! अब तक तो हमने जितने भी "युग" पढ़े हैं उनके नाम उस युग के साहित्य की विशेषताओं के आधार पर रखे गए थे परंतु आधुनिक काल के पहले दोनों युगों के नाम व्यक्तियों के नाम पर रखे गए हैं, ऐसा क्यों ?

अध्यापक : आपका सवाल सही है। भारतेंदु हरिश्चंद्र अपने समय के बहुत बड़े साहित्यकार थे। उन्होंने हिंदी में बहुत सी रचनाएँ लिखी हैं। भारतेंदु ने हिंदी में कविताएँ लिखीं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, आलोचना और निबंध आदि गद्य के रूपों का विकास किया। हिंदी भाषा के लिए भारतेंदु ने बहुत बड़ा काम किया। इसलिए इस युग का नाम भारतेंदु-युग रखा गया है। इसी तरह का महान कार्य आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया। भारतेंदु युग में हिंदी गद्य का विकास तो हुआ लेकिन उसमें अभी तक उतनी सुंदरता नहीं आई थी। साथ ही भारतेंदु युग में कविताएँ ब्रजभाषा में ही लिखी जाती थीं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने पत्र-पत्रिकाओं द्वारा हिंदी गद्य की भाषा का व्याकरण की दृष्टि से सुधार किया। उन्होंने ब्रज भाषा के स्थान पर खड़ी बोली में कविता लिखने के लिए लोगों को प्रेरणा दी। इसलिए इस युग का नाम आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर "द्विवेदी युग" रखा गया है।

छात्र : सर ! आपने यह नहीं बताया कि इन चारों युगों का समय कब से कब तक है ?

अध्यापक : संवत् 1925 से लेकर 1950 तक का समय **"भारतेंदु युग"** का समय है। द्विवेदी युग का समय संवत् 1950 आरंभ होता है और यह भी लगभग 25 वर्षों का है। छायावादी-युग संवत् 1975 के बाद माना जाता है और इसका समय भी लगभग 20-25 वर्षों का है। छायावाद के बाद का युग अभी तक चल रहा है।

छात्र : सर ! **"छायावाद"** का अर्थ क्या है ? इसे समझाने की कृपा करें।

अध्यापक : आप जानते ही हैं कि एक होती है वस्तु और दूसरी होती है उसकी छाया या परछाईं। कुछ आलोचकों ने कहा कि इस युग में जो कविताएँ लिखी गई हैं उनमें असली कविता नहीं है। उनमें कविता की केवल छाया है। इसलिए इस युग की कविताओं को छायावादी कविताएँ और उस युग को छायावाद-युग कहा गया।

छात्र : सर ! छायावाद के बाद से लेकर आज तक जो हिंदी साहित्य लिखा गया है वह किस प्रकार का है ?

अध्यापक : छायावाद के बाद के युग में साहित्य का बहुत ज्यादा विकास हुआ है। काव्य में प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता आदि धाराएँ आयी हैं। गद्य में कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आलोचना आदि का विकास हुआ है। आगे के अध्यायों में इस पर विस्तार से बातचीत करेंगे।

अभ्यास

1. नीचे आधुनिक काल के चार युगों के नाम दिए गए हैं आप इन्हें क्रम से लिखिए—

(द्विवेदी युग, छायावादोत्तर युग, भारतेंदु युग, छायावादी युग)

2. उचित शब्द डालकर वाक्य पूरे कीजिए—

(क) आधुनिक काल को कुछ लोग गद्यकाल तथा...........................भी कहते हैं।

(ख) इस काल के साहित्य में देश प्रेम और...........................की भावना अधिक है।

(ग) दूसरे युग का नाम हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार........................... के नाम पर रखा गया है।

(घ) भारतेंदु युग का समय संवत् 1925 से लेकर संवत्......................तक माना जाता है।

3. नीचे दिए गए कथनों पर सही (✓) अथवा गलत का (×) का निशान लगाइए—

(क) आधुनिक काल का आरंभ संवत् 1970 के बाद होता है। (   )

(ख) आधुनिक काल से पूर्व गद्य का विकास नहीं हुआ था। (   )

पाठ—8

भारतेंदु युग

भारतेंदु युग एवं उसकी प्रमुख विशेषताएँ, भारतेंदु युग के मुख्य लेखक एवं उनकी रचनाएँ, भारतेंदु युग का काव्य, भारतेंदु युग में पत्र-पत्रिकाएँ

अध्यापक : इस पाठ में आपको भारतेंदु-युग के हिंदी साहित्य के बारे में जानकारी दूँगा। एक बार मैं आपको फ़िर याद दिलाना चाहता हूँ कि भारतेंदु-युग का समय संवत् 1925 से 1950 तक है। भारतेंदु-युग के हिंदी साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस साहित्य में देश प्रेम अपनी भाषा के लिए प्रेम, भारतीय संस्कृति का गान और राष्ट्रीयता की भावना है।

छात्र : सर ! आप हमें यह समझाइए कि क्या कारण है कि आधुनिक काल का साहित्य रीतिकाल के साहित्य से इस तरह बिलकुल अलग है।

अध्यापक : यह आपका बिलकुल सही सवाल है। इसका कारण है उस काल की परिस्थितियाँ। इस समय तक भारत पर अंग्रेजों का शासन पूरी तरह से स्थापित हो गया था और इस कारण भारतीय संस्कृति, भारतीय उद्योग-धंधे सबको खतरा पैदा हो गया था। इसलिए साहित्य में

देश-प्रेम, भारतीय संस्कृति की रक्षा आदि की भावना दिखाई देती है।

छात्र : सर ! आपने बताया कि आधुनिक काल में गद्य भी लिखा गया। इसके संबंध में कुछ और बताइए।

अध्यापक : हाँ, इस काल में काव्य के साथ गद्य की भी रचनाएँ हुईं। उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, आलोचना, निबंध आदि इस काल में लिखे गए। इसके सिवाय पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हुईं। इस प्रकार इस काल में हिंदी भाषा का काफी विकास हुआ।

छात्र : सर ! भारतेंदु युग में उपन्यास ज्यादा लिखे गए या नाटक ?

अध्यापक : इस युग में बहुत अच्छे नाटक लिखे गए। भारतेंदु स्वयं बहुत अच्छे नाटककार थे। उनका "भारत दुर्दशा" तथा "नील देवी" बड़े ही प्रसिद्ध नाटक हैं।

इस युग के लेखक श्रीनिवास दास द्वारा लिखा हुआ "परीक्षा गुरू" हिंदी का पहला उपन्यास माना जाता है।

छात्र : सर ! आपने कहा कि इस काल में पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हुईं। उस समय की कौन सी मशहूर पत्रिकाएँ थीं ?

अध्यापक : इस काल में कई पत्र-पत्रिकाएँ निकलीं। स्वयं भारतेंदु दो पत्रिकाएँ निकालते थे। एक का नाम था "**कविवचन सुधा**" और दूसरी का नाम था "**हरिश्चंद्र मैगजीन**"।

इसके अलावा इस युग की कुछ अन्य प्रमुख पत्रिकाएँ थीं "भारत मित्र", "हिंदी प्रदीप", "बिहार बंधु" "ब्राह्मण" आदि।

छात्र : सर ! भारतेंदु युग के कवियों के संबंध में आपने कुछ नहीं बताया ।

अध्यापक : भारतेंदु स्वयं ही अच्छे कवि थे । इसके अलावा दूसरे मशहूर कवि थे प्रतापनारायण मिश्र, अम्बिकादत्त व्यास, राधाकृष्ण दास आदि । प्रतापनारायण मिश्र की "**हरगंगा**", "**बुढ़ापा**" आदि कविताएँ बड़ी ही मनोरंजक हैं । इस प्रकार भारतेंदु-युग में हिंदी साहित्य का बहुत विकास हुआ और हिंदी साहित्य के इस विकास में भारतेंदु हरिश्चंद्र का सबसे महत्वपूर्ण योगदान था ।

अभ्यास

1. नीचे दिए गए कथनों पर सही (√) अथवा गलत (×) का निशान लगाइए—

   (क) भारतेंदु-युग का समय संवत् 1925 से 1950 तक माना जाता है। ( )

   (ख) भारतेंदु-युग के साहित्य में देश-प्रेम, स्वभाषा प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना अधिक है। ( )

   (ग) भारतेंदु-युग का साहित्य रीतिकाल के साहित्य के समान शृंगार प्रधान है। ( )

   (घ) गद्य का प्रारंभ भारतेंदु-काल से माना जाता है। ( )

   (ङ) "परीक्षा गुरू" हिंदी साहित्य का पहला उपन्यास माना जाता है। ( )

   (च) भारतेंदु ने कविताएँ नहीं लिखीं। ( )

2. उचित शब्द डालकर वाक्य पूरे कीजिए—

   (क) देश-प्रेम, राष्ट्रभाषा-प्रेम एवं .... का गुणगान ही भारतेंदु युग की सबसे बड़ी विशेषता है।

   (ख) उस समय देश पर.............. का शासन था।

   (ग) इस काल के कवि देश .... के प्रति जागरूक थे।

   (घ) भारतेंदु युग में उपन्यास, कहानी, नाटक ....आदि का विकास हुआ।

   (ङ) "भारत-दुर्दशा" तथा ....भारतेंदु के दो प्रसिद्ध .... उपन्यास हैं।

   (च) भारतेंदु स्वयं दो पत्रिकाएँ निकालते थे—कविवचन सुधा और ....।

पाठ–9

द्विवेदी युग

द्विवेदी-युग एवं उसकी प्रमुख विशेषताएँ,
द्विवेदी युग के लेखक एवं उनकी रचनाएँ
द्विवेदी-युग के कवि एवं उनका काव्य ।

अध्यापक : छात्रो ! इस पाठ में आप द्विवेदी-युग के साहित्य के बारे में सुनेंगे । द्विवेदी युग का नाम आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर पड़ा है और इसका समय संवत् 1950 से 1975 तक माना जाता है ।

छात्र : सर ! द्विवेदी-युग के साहित्य में ऐसी कौन-सी विशेषताएँ थीं, जो भारतेंदु-युग में नहीं थीं ?

अध्यापक : द्विवेदी युग की सबसे बड़ी विशेषता है—कविता में ब्रजभाषा की जगह खड़ीबोली का प्रयोग । आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने खड़ी बोली में कविता करने के लिए कवियों को प्रेरित किया ।

छात्र : सर ! द्विवेदी-युग में जो गद्य साहित्य लिखा गया उसके संबंध में कुछ बताएँ ।

अध्यापक : इस युग में उपन्यास, नाटक, कहानी, निबंध, आलोचना आदि लिखे गए। इस काल में बंगला, संस्कृत, अंग्रेजी के नाटकों का हिंदी में काफी अनुवाद हुआ। इस युग के दो उपन्यासकारों के नाम बड़े मशहूर हैं। एक हैं गोपाल राम गहमरी और दूसरे हैं देवकी नंदन खत्री। गहमरी जी ने जासूसी और खत्री जी ने तिलस्मी उपन्यास अधिक लिखे। इस युग में आलोचना का विकास भी काफी हुआ। द्विवेदी जी स्वयं बहुत अच्छे आलोचक, संपादक और निबंधकार थे। द्विवेदी जी "सरस्वती" नामक पत्रिका का संपादन करते थे। इस युग के अन्य मशहूर लेखक हैं मिश्र बंधु, पं० पद्मसिंह शर्मा तथा कृष्ण बिहारी मिश्र।

छात्र : सर ! आपने द्विवेदी युग की कविता के संबंध में कुछ नहीं बताया। इस युग की कविता की क्या विशेषताएँ हैं ?

अध्यापक : द्विवेदी युग की कविता की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

1. इस युग में कविता ब्रजभाषा के बदले खड़ीबोली में लिखी गई।
2. इस युग की कविता में राष्ट्रीय भावना अधिक स्पष्ट है।
3. भारतीय-संस्कृति की महानता दिखाने के लिए इस युग में पुराणों और इतिहास की घटनाओं पर काव्य लिखे गए।
4. इस काल में प्रबंध काव्य अधिक लिखे गए जिनमें किसी न किसी कथा को आधार बनाया गया है।

छात्र : सर ! हमें अब द्विवेदी युग के प्रमुख कवियों के बारे में बताइए।

अध्यापक : इस युग के प्रमुख कवि थे श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय और मैथिलीशरण गुप्त। श्रीधर पाठक की मुख्य रचना "**श्रांत पथिक** अयोध्यासिंह उपाध्याय की प्रसिद्ध रचना "**प्रियप्रवास**"। मैथिलीशरण

गुप्त इस युग के प्रमुख कवि हैं। मैथिलीशरण गुप्त ने अनेक काव्य ग्रंथों की रचना की है। "साकेत" उनका सबसे प्रसिद्ध महाकाव्य है। इसमें भगवान राम के जीवन की कथा है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि द्विवेदी-युग में हिंदी गद्य का और अधिक विकास हुआ तथा भाषा का सुधार हुआ। इसके सिवाय काव्य में ब्रज भाषा के स्थान पर खड़ी बोली का प्रयोग होने लगा। इस सब में द्विवेदी जी का महत्वपूर्ण योगदान था। इसलिए इस युग को द्विवेदी-युग का नाम दिया गया है।

अभ्यास

1. नीचे दिए गए कथनों पर सही (√) अथवा गलत (×) का निशान लगाइए—
   - (क) भारतेंदु-युग के बाद द्विवेदी युग प्रारंभ होता है। ( )
   - (ख) द्विवेदी-युग का नाम आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर पड़ा। ( )
   - (ग) द्विवेदी-युग का समय संवत् 1950 से 1975 तक माना जाता है। ( )
   - (घ) द्विवेदी-युग में काव्य के क्षेत्र में खड़ी बोली का प्रयोग आरंभ हो चुका था। ( )
   - (च) द्विवेदी-युग में अधिकतर प्रबंध काव्य लिखे गए। ( )
2. उपयुक्त शब्द डालकर वाक्य पूरे कीजिए—
   - (क) द्विवेदी-युग में उपन्यास, नाटक, कहानी............................आदि विधाओं का विकास हुआ।
   - (ख) द्विवेदी-युग के दो प्रसिद्ध उपन्यासकार देवकी नंदन खत्री और ....थे।
   - (ग) महावीर प्रसाद द्विवेदी ने........................... नामक पत्रिका का संपादन किया।
   - (घ) महावीर प्रसाद द्विवेदी स्वयं बहुत अच्छे आलोचक, संपादक और ....थे।
   - (ङ) मिश्र बंधु, पं० पद्मसिंह शर्मा तथा कृष्ण बिहारी इस युग के प्रसिद्ध ....थे।
3. नीचे कुछ कवियों और कोष्ठक में उनकी रचनाओं के नाम दिए गए हैं। कवि के साथ उसकी रचना को मिलाकर लिखिए—
   - (क) मैथिलीशरण गुप्त ....
   - (ख) श्रीधर पाठक ....
   - (ग) अयोध्यासिंह उपाध्याय ....

   (श्रांत पथिक, प्रियप्रवास, साकेत)

पाठ–10

छायावादी-युग

छायावाद का अर्थ, छायावादी कविता की प्रमुख विशेषताएँ, प्रमुख छायावादी कवि एवं उनकी रचनाएँ, छायावादी युग का गद्य

अध्यापक : इस पाठ में आपको छायावादी युग के साहित्य के बारे में बताया जाएगा। "छायावाद" का आरंभ द्विवेदी युग के बाद संवत् 1975 से माना जाता है।

छात्र : सर ! इस युग को "छायावाद" क्यों कहते हैं ?

अध्यापक : कुछ आलोचक इस युग की कविता को कविता नहीं मानते थे। उन लोगों ने कह दिया कि इस युग की कविता, असली कविता नहीं, कविता की सिर्फ "**छाया**" है। ऐसे लोगों ने इस युग की कविता को "**छायावादी कविता**" कह दिया। लेकिन जब आप इस युग की कविताओं की विशेषताओं को समझ लेंगे तो आपको "**छायावाद**" का अर्थ अधिक आसानी से समझ में आ जाएगा।

छात्र : सर ! तब आप हमें इस युग की कविता की विशेषताएँ ही पहले बताइए।

अध्यापक : छायावादी कविता में प्रेम और सौन्दर्य का बड़ा ही सुंदर वर्णन हुआ है। इस युग के कवियों ने प्रकृति को नारी के रूप में चित्रित किया। इसके अलावा इस युग के कवियों ने रहस्य भरी कविताएँ लिखीं। इसलिए कुछ लोग इस युग को "रहस्यवादी युग" मानते हैं।

छात्र : सर ! रहस्यवाद से आपका क्या मतलब है ?

अध्यापक : इस युग के कवियों ने अज्ञात शक्ति प्रकृति अथवा परमात्मा के प्रति प्रेम और सौंदर्य की भावना प्रकट की। किसी अज्ञात वस्तु से प्रेम करना एक प्रकार का रहस्य है। जिस कविता में ऐसे प्रेम का वर्णन था उसे रहस्यवादी कविता कहा गया।

छात्र : सर ! इस युग के प्रमुख कवि कौन-कौन हैं।

अध्यापक : इस युग के चार कवियों का नाम बहुत प्रसिद्ध है। इनके नाम हैं— जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन "पंत", सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला", महादेवी वर्मा।

छात्र : सर ! आपने इन कवियों की रचनाओं के नाम तो बताए ही नहीं।

अध्यापक : हाँ, सुनिए। जयशंकर प्रसाद की मुख्य रचनाएँ हैं आँसू, लहर, एवं कामायनी। सुमित्रानंदन पंत की कई रचनाएँ है, जिनमें से मुख्य हैं—वीणा, पल्लव, गुंजन। निराला की मुख्य रचनाएँ हैं—परिमल, तुलसीदास, अनामिका, और महादेवी वर्मा की कुछ मुख्य रचनाएँ हैं—नीहार, नीरजा, दीपशिखा, यामा।

छात्र : सर ! हमने तो जयशंकर प्रसाद का नाम नाटककार के रूप में सुना था। क्या वे कोई दूसरे प्रसाद हैं ?

अध्यापक : नहीं ! जयशंकर प्रसाद तो एक ही हैं। जयशंकर प्रसाद ने जितनी अच्छी कविताएँ लिखीं उतने ही अच्छे नाटक भी लिखे हैं।

छात्र : सर ! जब ये चारों ही साहित्यकार इतने बड़े साहित्यकार हैं तब आप हमें इन चारों के बारे में कुछ बताइए ।

अध्यापक : सबसे पहले मैं आपको महादेवी वर्मा के विषय में बताऊँगा । महादेवी जी ने बड़े ही सुंदर विरह गीत लिखे हैं। कविता के अलावा "**रेखाचित्र**" और "**संस्मरण**" भी लिखे हैं। रेखाचित्र लिखने के क्षेत्र में आज भी हिंदी में उनसे बड़ा कोई लेखक नहीं है।

सुमित्रानंदन पंत की कविता में कोमल भावनाओं का बड़ा ही सुंदर चित्रण देखने को मिलता है । सूर्यकांत त्रिपाठी निराला इस युग के बड़े ही सशक्त कवि हैं। उन्होंने रहस्यवादी दार्शनिक कविताएँ भी लिखीं और कुछ ऐसे विषयों पर भी कविताएँ लिखीं जो आम आदमी से संबंध रखती थीं। जैसे "वह तोड़ती पत्थर" "विधवा" "भिखारी" । निराला जी ने कुछ उपन्यास और कहानियाँ भी लिखीं हैं। प्रसाद जी उच्च कोटि के कवि थे। प्रसाद जी का महाकाव्य "कामायनी" सारे आधुनिक युग का अकेला ही प्रतिनिधि काव्य है । वे महान नाटककार थे। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि प्रसाद ने बहुत सुंदर उपन्यास, कहानियाँ और निबंध भी लिखे हैं।

इस प्रकार छायावादी युग हिंदी साहित्य का ऐसा युग है जिसमें प्रेम और सौंदर्य की भावना से भरा हुआ बहुत सुंदर काव्य लिखा गया । अज्ञात शक्ति के प्रति प्रेम होने के कारण इस युग के काव्य में रहस्य की भावना है । इस युग के काव्य की भाषा बड़ी ही मधुर एवं कोमल है ।

अभ्यास

1. नीचे कुछ कवियों एवं उनकी रचनाओं के नाम दिए गए हैं आप कवि और उनकी रचना का मिलान करके लिखिए—

    (क) जयशंकर प्रसाद ....

    (ख) सुमित्रानंदन पंत ....

    (ग) सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" ....

    (घ) महादेवी वर्मा ....

    (वीणा, पल्लव, नीरजा, दीपशिखा, आँसू, कामायनी)

2. नीचे दिए गए कथनों पर सही (✓) अथवा गलत (×) का निशान लगाइए—

    (क) छायावादी कविता में प्रकृति का चित्रण सुंदर रूप में हुआ है। ( )

    (ख) छायावादी कविता की भाषा ब्रजभाषा है। ( )

    (ग) जयशंकर प्रसाद नाटककार और कवि दोनों ही थे। ( )

    (घ) महादेवी वर्मा ने कविता के अतिरिक्त "रेखाचित्र" और "संस्मरण" भी लिखे हैं। ( )

    (ङ) सुमित्रानंदन पंत की कविता में कोमल भावनाओं का सुंदर चित्रण देखने को मिलता है। ( )

3. उचित शब्द डालकर वाक्य पूरे कीजिए—

    (क) कामायनी जयशंकर प्रसाद का प्रसिद्ध....................है।

    (ख) "बिधवा" "भिखारी"..............की प्रसिद्ध कविताएँ हैं।

    (ग) निराला जी ने कविता के अतिरिक्त उपन्यास और....................की भी रचना की है।

    (घ) महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य में..............लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं।

    (ङ) छायावाद के प्रमुख कवि–जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला", महादेवी वर्मा और....................हैं।

पाठ—11

उत्तर छायावाद

छायावाद के बाद का काव्य, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद एवं नई कविता, मुख्य कवि एवं उनकी रचनाएँ।

अध्यापक : इस पाठ में आपको छायावाद के बाद के साहित्य के विषय में बताया जाएगा। "छायावाद" के अंत से लेकर आज तक का साहित्य लगभग 50 वर्षों का साहित्य है। इस काल में हिंदी काव्य में दो मुख्य प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ती हैं। ये हैं "प्रगतिवाद" और "प्रयोगवाद" की प्रवृत्तियाँ।

छात्र : सर ! हिंदी काव्य में प्रगतिवाद का क्या मतलब है ?

अध्यापक : आपको शायद मालूम होगा कि 1917 में रूस में क्रांति हुई। इसका प्रभाव सारे विश्व पर हुआ। भारत में भी कार्ल-मार्क्स के समाजवादी सिद्धांतों और विचारों का प्रचार हुआ। हिंदी साहित्य में भी ऐसी धारा चली जिसमें समाजवाद का प्रभाव था। जो कविता मार्क्सवादी या समाजवादी विचारधारा को आधार बनाकर लिखी गयी उसे "प्रगतिवादी कविता" कहा गया।

छात्र : सर ! प्रगतिवादी कविता की कौन-कौन सी विशेषताएँ हैं ?

अध्यापक : प्रगतिवादी कविता में धर्म, ईश्वर आदि का कड़ा विरोध किया गया। इन कवियों में शोषक वर्ग के प्रति घृणा तथा शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति दिखाई। इन कवियों की शैली बड़ी सरल थी। आप एक उदाहरण देखिए—

ओ, मज़दूर ! ओ, मज़दूर !!
तू सब चीजों का कर्त्ता, तू सब चीजों से दूर,
ओ, मज़दूर ! ओ, मज़दूर !!

दिनकर की कविता का एक उदाहरण देखिए जिसमें गरीबों की दयनीय दशा का बड़ा ही मार्मिक वर्णन है—

श्वानों को मिलता वस्त्र दूध, भूखे बालक अकुलाते हैं।
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर, जाड़ों की रात बिताते हैं।
युवती की लज्जा वसन बेच, जब ब्याज चुकाए जाते हैं।
मालिक जब तेल फुलेलों पर, पानी सा द्रव्य बहाते हैं।
पापी महलों का अहंकार देता, मुझको तब आमंत्रण।

छात्र : सर ! प्रगतिवाद के प्रमुख कवि कौन हैं ?

अध्यापक : प्रगतिवाद के कुछ प्रसिद्ध कवियों के नाम हैं—शिवमंगल सिंह सुमन, रामधारी सिंह दिनकर, नागार्जुन आदि।

छात्र : सर ! प्रगतिवादी कविता के अलावा आपने जो दूसरा नाम बताया था—"प्रयोगवाद"। प्रयोगवादी कवि किस तरह की कविता लिखा करते थे ?

अध्यापक : प्रयोगवादी कवियों ने कविता में नए-नए प्रयोग किए। प्रयोगवादी कवियों ने नए-नए विषयों पर कविताएँ लिखना शुरू किया। प्रयोग-वाद से पहले कविता में किसी न किसी छंद का प्रयोग होता था। इस युग के कवियों ने "छंद" को छोड़ दिया और गद्य जैसी कविता लिखी जाने लगी। कविता में भाव के स्थान पर बौद्धिकता को अधिक महत्व दिया गया।

छात्र—1 : सर ! हिंदी में आजकल जो कविता लिखी जा रही है उसे भी प्रयोग-वादी कविता कहते हैं ?

अध्यापक : जिस कविता को प्रयोगवादी कविता कहते थे उसमें भी आगे चलकर काफी परिवर्तन हुए और उसका जो नया रूप बना उसे "नई कविता" कहा गया।

छात्र : सर ! "नई कविता" लिखने वाले कौन-कौन से कवि हैं ?

अध्यापक : सभी प्रयोगवादी कवि ही "नई कविता" के भी कवि हैं। उनके अलावा कुछ और कवियों के भी नाम प्रसिद्ध हैं। जैसे— धर्मवीर भारती, जगदीश गुप्त, केदार नाथ सिंह, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय आदि।

छात्र : सर ! आपने छायावाद के बाद के प्रमुख कवियों के नाम तो बताए किंतु उनकी रचनाओं के नाम नहीं बताए। यदि आप कुछ कवियों और उनकी रचनाओं के नाम बताएँ तो बड़ी कृपा होगी।

अध्यापक : छायावाद के बाद के कुछ प्रसिद्ध कवि और उनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं—

1. रामधारी सिंह "दिनकर" —"कुरुक्षेत्र", "उर्वशी"।
2. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय" --"भग्नदूत", "हरीघास पर क्षण भर"।
3. धर्मवीर भारती —"अंधायुग", "कनुप्रिया"।
4. गजानन माधव "मुक्तिबोध"—"चाँद का मुँह टेढ़ा है"।
5. गिरिजा कुमार माथुर —"धूप के धान"।
6. भवानी प्रसाद मिश्र —"गीत फरोश"।

छात्र : सर ! इस युग के गद्य साहित्य के बारे में तो आपने कुछ बताया ही नहीं !

अध्यापक : आधुनिक काल में जो गद्य साहित्य लिखा गया है, उसके बारे में आपको अलग से आगे के पाठों में बताया जाएगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि छायावाद के बाद हिंदी कविता में काफी परिवर्तन आया। हिंदी कविता में प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद की प्रवृत्तियों का विकास हुआ तथा उसके बाद हिंदी कविता ने "नई कविता" का रूप धारण किया। इस युग में गद्य का भी बहुत विकास हुआ।

टिप्पणियाँ

नई कविता

प्रयोगवाद के बाद हिंदी की आधुनिक कविता में स्थिरता आई। उसके अपने मूल्य स्थापित हुए। अब इस कविता का नाम "नई कविता" रखा गया। इसमें वे सारे कवि तो आते ही हैं जो प्रयोगवाद के कवि थे, इनके अलावा दूसरे अनेक कवि इस काल में प्रसिद्ध हुए जैसे धर्मवीर भारती, भारत भूषण अग्रवाल, भवानी प्रसाद मिश्र, लक्ष्मीकांत वर्मा, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, नरेश मेहता आदि।

प्रगतिवाद

छायावाद के बाद एक धारा प्रगतिवादी साहित्य की चली। कुछ कवि ऐसे थे जो विचारों में कार्लमार्क्स के सिद्धांतों को मानते थे। इसी मार्क्सवादी या समाज-वादी दृष्टि से जो साहित्य लिखा गया वह प्रगतिवादी साहित्य कहलाया। इस काव्य-धारा के प्रमुख कवि हैं– नरेंद्र शर्मा, शिवमंगल सिंह सुमन, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, रांगेय राघव, त्रिलोचन, गजानन माधव मुक्तिबोध आदि। प्रगतिवादी कविता की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) प्रगतिवादी साहित्य में पुरानी रूढ़ियों, अंधविश्वासों, ईश्वर, धर्म, आत्मा-परमात्मा, भाग्य, स्वर्ग-नरक, लोक परलोक सब का कड़ा विरोध किया गया और मनुष्य का स्थान इनमें सबसे ऊपर माना गया।

(2) जो लोग दलित तथा शोषित थे उनके दुःखों का गान कविता में हुआ।

(3) शोषकों के प्रति घृणा का भाव दिखाई देता है।

(4) कविता में क्रांति की भावना तेजी से सामने उभरी।

(5) मानवतावाद की स्थापना की गयी आदि।

प्रयोगवाद

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में छायावाद के बाद लगभग दस वर्षों तक कविता के क्षेत्र में नए-नए प्रयोग किए गए। इस समय की कविता को "प्रयोगवादी कविता" कहा जाता है। प्रयोगवाद के आरंभ करने का श्रेय सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय" को है। वे ही इस कविता के प्रवर्तक माने जाते हैं। "अज्ञेय" जी ने 1943 में 'तार सप्तक" नामक काव्य-ग्रंथ का संपादन किया। तार सप्तक में जितने भी कवि आए वे प्रयोगवादी कवि कहे गए। ये कवि हैं– अज्ञेय, गजानन माधव "मुक्तिबोध", नेमीचंद जैन, भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजा कुमार माथुर और रामविलास शर्मा। प्रयोगवादी कविता की निम्नलिखित विशेषताएँ बतायी गयी हैं –

(1) प्रयोगवाद प्राचीनता से नवीनता की ओर आगे बढ़ता है।

(2) प्रयोगवाद में अपनी पुरानी परंपराओं से हटकर कविताएँ लिखी गयीं।

अभ्यास

1. नीचे कुछ कवियों और कोष्ठक में उनकी रचनाओं के नाम दिए गए हैं। आप कवि के नाम के सामने उसकी रचना का नाम लिखिए—

   (क) रामधारी सिंह "दिनकर"..................................

   (ख) सच्चिदानंद वात्स्यायन "अज्ञेय" ....

   (ग) धर्मवीर भारती..................................

   (घ) गजानन माधव "मुक्तिबोध"..................................

   (ङ) गिरिजा कुमार माथुर..................................

   (च) भवानी प्रसाद मिश्र..................................

   (धूप के धान, हरीघास पर क्षण भर, अंधायुग, कनुप्रिया, गीत फरोश, कुरुक्षेत्र, उर्वशी, चाँद का मुँह टेढ़ा है।)

2. नीचे दिए गए वाक्यों को कोष्ठक में दिए गए सही शब्दों के आधार पर पूरा कीजिए।

   (क) छायावाद के बाद हिंदी कविता में....................और....................की प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ती हैं। (प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, छायावाद)

   (ख) मार्क्सवादी विचारधारा को आधार बनाकर लिखी गई कविता को ....कविता कहा गया। (प्रयोगवादी, प्रगतिवादी)

   (ग) जिस कविता में नए-नए प्रयोग किए गए उस कविता को.................... कविता कहा गया। (प्रगतिवादी, प्रयोगवादी)

   (घ) प्रयोगवादी कविता के बाद लिखी गयी हिंदी कविता को.................... कविता का नाम दिया गया। (छायावादी, नई कविता)

   (ङ) दिनकर....................कवि हैं और अज्ञेय....................कवि हैं। (प्रयोगवादी, राष्ट्रीय)

पाठ–12

हिंदी उपन्यास

> हिंदी में उपन्यास का आरंभ एवं हिंदी का प्रथम उपन्यास, हिंदी उपन्यास का विकास, प्रेमचंद पूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंद उत्तर युग।

अध्यापक : इस पाठ में आपको हिंदी के उपन्यास साहित्य के बारे में बताया जाएगा। हिंदी में उपन्यास लिखने का आरंभ आधुनिक काल से होता है।

छात्र : सर ! हिंदी का पहला उपन्यास कौन है।

अध्यापक : हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास श्रीनिवास दास का "परीक्षा गुरु" माना जाता है।

छात्र : सर ! हमने सुना है कि प्रेमचंद ने बहुत अच्छे उपन्यास लिखे हैं। क्या प्रेमचंद से पहले भी उपन्यास लिखे गये थे ?

अध्यापक : हाँ, प्रेमचंद से पहले भी हिंदी में उपन्यास लिखे गए थे। हिंदी के उपन्यास साहित्य को तीन हिस्सों में बाँटा जाता है—

प्रेमचंद पूर्व युग, प्रेमचांद युग, प्रेमचंदोत्तर युग।

छात्र : सर ! प्रेमचंद से पूर्व के उपन्यास किस प्रकार के थे ?

अध्यापक : प्रेमचंद से पूर्व के युग में सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, प्रेम-प्रधान, जासूसी, तिलस्मी सभी प्रकार के उपन्यास लिखे गए हैं। सामाजिक उपन्यासों में नैतिक शिक्षा, समाज सुधार और भारतीय संस्कृति का गुणगान अधिक है। पश्चिमी सभ्यता की आलोचना भी इस काल के उपन्यासों में है। तिलस्मी-जासूसी उपन्यासों में चमत्कार है। हाँ, इस प्रकार के उपन्यासों में अस्वाभाविकता अधिक है।

छात्र : सर ! अब हमें प्रेमचंद जी के विषय में बताइए।

अध्यापक : प्रेमचंद हिंदी के बहुत बड़े उपन्यासकार थे। उन्हें हिंदी का उपन्यास सम्राट कहते हैं। प्रेमचंद के उपन्यास भारतीय जन-जीवन के उपन्यास हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों में भारतीय जीवन और उसकी समस्याओं का यथार्थ चित्र है।

छात्र : सर ! प्रेमचंद ने भारत की किन समस्याओं पर उपन्यास लिखे हैं ?

अध्यापक : किसानों की समस्या के अलावा प्रेमचंद ने विधवा विवाह, वेश्याओं की समस्या, शासक वर्ग के अत्याचार आदि समस्याओं को लेकर उपन्यास लिखे थे।

छात्र : सर ! प्रेमचंद जी के कुछ प्रमुख उपन्यासों के नाम बताने की कृपा करें।

अध्यापक : प्रेमचंद के उपन्यासों में "सेवा सदन", "रंगभूमि", "कर्मभूमि", "गबन", "कायाकल्प", "निर्मला" तथा "गोदान" बड़े ही प्रसिद्ध उपन्यास हैं। इन सब में "गोदान" उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है। इसमें गरीब किसान और मजदूरों के शोषण की कहानी है।

छात्र : सर ! प्रेमचंद युग के दूसरे उपन्यासकार कौन-कौन से हैं ?

अध्यापक : प्रेमचंद युग के दूसरे प्रमुख उपन्यासकार तथा उनके उपन्यासों के नाम इस प्रकार हैं—

जयशंकर प्रसाद	—"कंकाल", "तितली"
चतुरसेन शास्त्री	—"परख", "हृदय की प्यास"
वेचन शर्मा "उग्र"	—"चंद हसीनों के खतूत"
वृन्दावन लाल वर्मा	—"मृगनयनी", "गढ़ कुंडार"
जैनेंद्र कुमार	—"परख", "सुनीता", "त्याग पत्र"
इलाचंद्र जोशी	—"पर्दे की रानी" आदि।

छात्र : सर ! प्रेमचंद के बाद किस प्रकार के उपन्यास लिखे गए ?

अध्यापक : प्रेमचंद के बाद के युग में उपन्यास के क्षेत्र में बहुत विकास हुआ। इस युग में सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, साम्यवादी, ऐतिहासिक आदि सभी प्रकार के उपन्यास लिखे गए।

छात्र : सर ! इस युग के प्रमुख उपन्यासकार कौन थे तथा उनके प्रमुख उपन्यास कौन से थे ?

अध्यापक : कुछ ऐसे उपन्यासकार हैं जो प्रेमचंद के समय में भी लिख रहे थे और उनके बाद भी लिखते रहे, जैसे जैनेंद्र कुमार। इस युग के अन्य प्रमुख उपन्यासकार थे—भगवती चरण वर्मा, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय", यशपाल, फणीश्वर नाथ रेणु। भगवती चरण वर्मा के प्रमुख उपन्यास हैं—"चित्रलेखा", "टेढ़े मेढ़े रास्ते"। अज्ञेय के प्रमुख उपन्यास हैं—"शेखर एक जीवनी", "नदी के द्वीप"। यशपाल के प्रसिद्ध उपन्यासों में "दादा कामरेड", "कल्याण", "दिव्या" हैं फणीश्वर नाथ रेणु का प्रसिद्ध उपन्यास है—"मैला आँचल"।

छात्र : सर ! हमें प्रेमचंद के बाद के युग के कुछ प्रसिद्ध उपन्यासों के नाम बताइए जिनको हम समय मिलने पर पढ़ सकें ।

अध्यापक : हाँ आप लोगों को कुछ उपन्यासों के नाम बताता हूँ । ये हिंदी के अपने-अपने क्षेत्र के बड़े ही सुंदर और प्रसिद्ध उपन्यास हैं । धर्मवीर भारती का लिखा हुआ "सूरज का सातवाँ घोड़ा" अमृतलाल नागर के उपन्यास "मानस का हंस" तथा "खंजन नयन", अज्ञेय का "नदी के द्वीप", श्रीलाल शुक्ल का लिखा हुआ उपन्यास ' राग दरबारी", "एक इंच मुस्कान" जो राजेंद्र यादव और मन्नू भंडारी ने मिलकर लिखा है तथा "आपका बंटी" मन्नू भंडारी का लिखा हुआ उपन्यास है ।

इस तरह हमने देखा कि हिंदी में उपन्यास का आरंभ आधुनिक काल से होता है किंतु थोड़े समय में ही उपन्यास का काफी विकास हुआ है । हिंदी उपन्यास के विकास में प्रेमचंद का महत्वपूर्ण योगदान है । आजकल हिंदी में भिन्न-भिन्न विषयों पर विविध शैलियों में उपन्यास लिखे जा रहे हैं ।

अभ्यास

1. नीचे कुछ उपन्यासों के नाम दिए गए हैं आप इनके सामने उनके रचनाकारों के नाम लिखिए ।

(क) परीक्षा गुरु ....

(ख) गोदान ....

(ग) त्यागपत्र ....

(घ) मृगनयनी ....

(ङ) दिव्या ....

2. नीचे कुछ रचनाकारों और कोष्ठक में उनकी रचनाओं के नाम दिए गए हैं । आप रचनाकार के नाम के सामने उसकी रचना लिखिए ।

(क) मन्नू भंडारी ....

(ख) श्रीलाल शुक्ल ....

(ग) अज्ञेय ....

(घ) अमृतलाल नागर ....

(ङ) धर्मवीर भारती ....

(मानस का हंस, सूरज का सातवाँ घोड़ा, आपका बंटी, शेखर एक जीवनी, राग दरबारी)

पाठ–13

हिंदी कहानी

हिंदी कहानी का आरंभ और हिंदी की प्रथम कहानी, हिंदी कहानी का विकास, प्रेमचंद से पूर्व कहानी, प्रेमचंद युग की कहानी और नई कहानी ।

अध्यापक : पिछले पाठ में आपने हिंदी उपन्यासों के बारे पढ़ा था। इस पाठ में आपको "हिंदी कहानी" के बारे में बताया जाएगा। हिंदी कहानी का आरंभ भी आधुनिक काल से ही होता है।

छात्र : सर ! हिंदी की पहली कहानी कौन-सी है ?

अध्यापक : यह एक कठिन सवाल है। इस संबंध में सभी विद्वान एक मत नहीं हैं। अधिकतर लोग इंशाअल्लाखाँ की "रानी केतकी की कहानी" को हिंदी की पहली कहानी मानते हैं। पर इस कहानी में आधुनिक कहानियों जैसी विशेषताएँ नहीं हैं।

छात्र—2 : सर ! तो फिर आधुनिक ढंग की कहानियों का आरंभ कब हुआ ?

अध्यापक : ऐसा है कि सन् 1900 में इलाहाबाद से "सरस्वती" नाम की एक पत्रिका निकाली गयी। इस पत्रिका में उन दिनों बहुत सी कहानियाँ

प्रकाशित हुईं। उनमें से कुछ प्रसिद्ध कहानियाँ हैं—1. गोस्वामी किशोरी लाल की कहानी "इंदुमती", 2. बंग महिला-दुलाईवाली 3. वृन्दावन लाल वर्मा की कहानी "नकली बिल" आदि। लेकिन आधुनिक हिंदी कहानी की वास्तविक शुरुआत जयशंकर प्रसाद और मुंशी प्रेमचंद की कहानियों से होती है।

छात्र : सर ! मुंशी प्रेमचंद तो उपन्यासकार थे तथा प्रसाद कवि। क्या ये दोनों लोग अच्छे कहानीकार भी थे ?

अध्यापक : जी हाँ ! प्रसाद और प्रेमचंद दोनों ही अच्छे कहानी लेखक भी थे। प्रेमचंद जितने अच्छे उपन्यासकार थे उतने ही महान कहानीकार भी थे।

छात्र : सर ! तब आप हमें इन दोनों कहानीकारों की कहानियों के विषय में कुछ बताइए।

अध्यापक : देखिए, जयशंकर प्रसाद की लगभग सभी कहानियाँ प्रेम और सौंदर्य की कहानियाँ हैं। प्रसाद जी की कहानियों की भाषा में संस्कृत की शब्दावली का प्रयोग अधिक है।

प्रेमचंद की भाषा एकदम सरल और सहज है। मुंशी प्रेमचंद पहले उर्दू में कहानियाँ लिखा करते थे। बाद में उन्होंने हिंदी में लिखना आरंभ किया। प्रेमचंद ने तीन सौ से भी अधिक कहानियाँ लिखी हैं। इन कहानियों में उन्होंने अनेक सामाजिक समस्याओं के बारे में लिखा है।

छात्र : सर ! प्रेमचंद जी की कुछ प्रसिद्ध कहानियों के नाम बताएँ। हम उन्हें पढ़ना चाहते हैं।

अध्यापक : यों तो प्रेमचंद की बहुत सी कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। उनमें से कुछ के नाम हैं—पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, शतरंज के खिलाड़ी, ईदगाह, पूस की रात, कफ़न आदि।

छात्र : सर ! मुंशी प्रेमचंद के समकालीन दूसरे कहानीकार कौन थे ?

अध्यापक : मुंशी प्रेमचंद के समय के दूसरे प्रसिद्ध कहानीकार हैं—चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, विश्वम्भर नाथ कौशिक, सुदर्शन आदि। इनमें गुलेरी की कहानी "उसने कहा था" बड़ी प्रसिद्ध कहानी है। कौशिक जी ने भी लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखी हैं।

छात्र : सर ! प्रेमचंद के बाद के कहानीकारों में किस कहानीकार का नाम प्रसिद्ध है ?

अध्यापक : प्रेमचंद के बाद के कहानीकारों में जैनेंद्र कुमार का नाम बड़ा महत्व रखता है। जैनेंद्र जी ने मनोवैज्ञानिक कहानियाँ अधिक लिखी हैं। इनके अनेक कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं जिनमें—वातायन, स्पर्धा, फांसी, पाजेब, एक रात, दो चिड़ियाँ, प्रसिद्ध हैं।

छात्र : सर ! जैनेंद्र जी ने तो उपन्यास भी लिखे थे। हिंदी के और कौन से प्रमुख कहानीकार हैं जिन्होंने उपन्यास भी लिखे हैं।

अध्यापक : ऐसे देखा जाए तो जिन लेखकों ने उपन्यास लिखे हैं उन्होंने कहानियाँ भी लिखी हैं। जैसे अज्ञेय, भगवती चरण वर्मा, यशपाल आदि। इन सभी लेखकों ने उपन्यास भी लिखे हैं और बहुत अच्छी कहानियाँ भी लिखी हैं।

छात्र : क्या आजकल जो कहानियाँ लिखी जा रही हैं, वे प्रेमचंद युग की कहानियों से अलग हैं ?

अध्यापक : प्रेमचंद के बाद हिंदी कहानी में बहुत से परिवर्तन आए हैं। सन् 1950 के आसपास से हिंदी में "नई कहानी" का आरंभ हुआ।

छात्र : सर ! "नई कहानी" किस तरह की कहानी थी ? क्या ये कहानियाँ अपने से पहले की कहानियों से भिन्न हैं ?

अध्यापक : सन् 1950 के आसपास ही हिंदी कविता में भी बदलाव आया था और उस युग की कविता को "नई कविता" कहा गया था। इस समय की कहानी में भी जीवन की पीड़ा, निराशा, घुटन आदि का चित्रण अधिक हुआ है। इन कहानियों की भाषा और शैली में भी नवीनता है।

छात्र : सर ! "नई कहानी" के प्रसिद्ध लेखक कौन-कौन से हैं ?

अध्यापक : नई कहानी लेखकों में मोहन राकेश, राजेंद्र यादव, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, अमरकांत, अजितकुमार, मार्कण्डेय, अमृत-राय, रघुवीर सहाय, मन्नू भंडारी आदि के नाम मशहूर हैं।

इस प्रकार हमने देखा कि उपन्यास के समान हिंदी में कहानी का आरंभ भी आधुनिक काल से ही होता है और हिंदी कहानी के विकास में भी प्रेमचंद की महत्वपूर्ण भूमिका है। हमने यह भी देखा कि हिंदी कहानी में काफी विकास हुआ है और आधुनिक हिंदी कहानी में विषय और शैली की विविधता है।

अभ्यास

1. उचित शब्द डालकर वाक्य पूरे कीजिए—

   (1) हिंदी कहानी का आरंभ..................काल से माना जाता है।

   (2) हिंदी की पहली कहानी..................मानी जाती है।

2. नीचे कुछ रचनाकारों के नाम दिए गए हैं। आप बताइए कि वे किस-किस के लिए प्रसिद्ध हैं ?

लेखक	उपन्यासकार	कहानीकार	कवि
जयशंकर प्रसाद	....	....	....
जैनेंद्र कुमार	....	....	....
भगवतीचरण वर्मा	....	....	....
अज्ञेय	....	....	....
भारतेंदु हरिश्चंद्र	....	....	....
यशपाल	....	....	....

3. नीचे दिए गए वाक्यों को कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर पूरा कीजिए—

   (1) जैनेंद्र जी ने..................कहानियाँ अधिक लिखी हैं।

   (मनोवैज्ञानिक, सामाजिक)

   (2) प्रेमचंद की कहानियों में..................समस्याओं, का अधिक वर्णन है।

   (राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक)

पाठ–14

हिंदी नाटक

> हिंदी नाटक का आरंभ, भारतेंदु युग के नाटक और नाटककार, द्विवेदी युग के नाटक और नाटककार, प्रसादोत्तर युग के हिंदी नाटक और नाटककार

अध्यापक : इस पाठ में आपको हिंदी नाटक और हिंदी एकांकी के विकास के बारे में बताया जाएगा।

छात्र : सर ! जब हिंदी गद्य का आरंभ ही आधुनिक काल से होता है तब नाटक का आरंभ भी आधुनिक काल से ही होता होगा ?

अध्यापक : आपने ठीक कहा हिंदी नाटकों का आरंभ भी आधुनिक युग से ही होता है, और इस हिंदी के पहले प्रसिद्ध नाटककार भारतेंदु हरिश्चंद्र ही हैं।

छात्र : सर। हमें भारतेंदु के नाटकों के बारे में कुछ बताइए।

अध्यापक : भारतेंदु ने बहुत से नाटक लिखे हैं। भारतेंदु ने नाटकों में जीवन की अनेक समस्याओं को लिया है। उनके "सती प्रताप" और "नील देवी" नाटकों में भारतीय संस्कृति का गुणगान है। उनके सबसे प्रसिद्ध

नाटक "भारत दुर्दशा" में राष्ट्र-प्रेम को दिखाया गया है। "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति" में माँस खाने वालों पर तथा "अंधेर नगरी" में ख़राब राज्य व्यवस्था पर गहरा व्यंग्य किया गया है।

छात्र : भारतेंदु युग के अन्य नाटककार कौन-कौन हैं ? तथा उनके कौन से नाटक हैं ?

अध्यापक : इस युग के कुछ अन्य प्रसिद्ध नाटककार हैं—राधाकृष्ण दास का नाटक "दुःखिनी बाला", प्रतापनारायण मिश्र का "गौ संकट", बालकृष्ण भट्ट का नाटक "शिक्षा सदन", और राधाचरण गोस्वामी का नाटक "बूढ़े मुँह मुहाँसे"।

छात्र : सर ! भारतेंदु युग के बाद द्विवेदी युग में भी नाटक लिखे गए होंगे। उनके विषय में भी कुछ बताइए।

अध्यापक : द्विवेदी युग में मौलिक नाटक कम ही लिखे गए। इस युग में दूसरी भाषाओं के नाटक के अनुवाद अधिक हुए। भारतेंदु युग के बाद अच्छे नाटक जयशंकर प्रसाद ने लिखे। इसीलिए द्विवेदी युग के बाद के नाटकों के पूरे युग को "प्रसाद युग" नाम दिया गया।

छात्र : सर ! तब आप हमें प्रसाद के नाटकों के बारे में कुछ बताइए।

अध्यापक : जयशंकर प्रसाद के नाटकों में भारतीय और पश्चिमी नाटक-कला का सुंदर योग दिखायी देता है। प्रसाद ने बहुत से नाटक लिखे हैं। "चंद्रगुप्त", "स्कन्दगुप्त", अजातशत्रु", "राजश्री" और "ध्रुव-स्वामिनी" उनके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं। उन्होंने कुछ एकांकी नाटक भी लिखे थे। "सज्जन", "कल्याणी परिणय", "प्रायश्चित", "एक-घूँट" और "करुणालय" उनके प्रसिद्ध एकांकी नाटक हैं।

छात्र : सर ! प्रसाद के अलावा और कौन-से नाटककार हैं जिन्होंने एकांकी नाटक लिखे हैं ?

अध्यापक : प्रसाद के अलावा रामकुमार वर्मा, सेठ गोविंद दास, विष्णु प्रभाकर आदि ऐसे नाटककार हैं जिन्होंने एकांकी नाटक भी लिखे हैं। रामकुमार वर्मा का "रेशमी टाई", "चारुमित्र" आदि और सेठ गोविंद दास का "नवरत्न", "स्पर्धा" आदि काफी प्रसिद्ध एकांकी नाटक हैं।

छात्र : सर ! प्रसाद के बाद कौन-कौन से प्रसिद्ध नाटककार हुए हैं।

अध्यापक : प्रसाद के बाद के नाटककारों में जगदीश प्रसाद माथुर, मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल, उपेंद्रनाथ अश्क, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। मोहन राकेश ने अपने जीवन में केवल तीन नाटक लिखे लेकिन उनके नाटक बहुत प्रसिद्ध हैं। उनके नाटक हैं—"आषाढ़ का एक दिन", "लहरों का राजहंस" तथा "आधे अधूरे"।

छात्र : सर ! हिंदी में रेडियो और टेलीविजन के लिए नाटक नहीं लिखे गए हैं ?

अध्यापक : हिंदी में रेडियो और टेलीविजन के लिए भी बहुत नाटक लिखे गए हैं और लिखे जा रहे हैं। आजकल तो रेडियो-रूपक, फीचर, ध्वनि नाटक, आदि तरह-तरह के नाटक लिखे जा रहे हैं। आजकल महा-काव्यों और प्रसिद्ध साहित्यिक रचनाओं को भी रेडियो-टेलिविजन पर प्रसारित किया जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतेंदु युग से नाटक का आरंभ होता है। भारतेंदु के बाद जयशंकर प्रसाद ने बड़े सुंदर नाटक तथा एकांकी नाटक लिखे। आजकल हिंदी में अनेक विषयों पर और अनेक शैलियों में नाटक लिखे जा रहे हैं। इन नाटकों पर एक ओर पश्चिम के नाटकों का प्रभाव दिखायी पड़ता है तो दूसरी ओर इनमें भारतीय लोक नाटकों की झलक दिखायी पड़ती है। रेडियो और टेलीविजन के कारण नाटकों का प्रचार-प्रसार बढ़ा है।

अभ्यास

1. नीचे दिए गए कथनों पर सही (√) अथवा गलत (×) का निशान लगाइए।

   (क) प्रसाद के नाटकों में भारतीय और पाश्चात्य कला का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

   (ख) "आषाढ़ का एक दिन" नाटक के लेखक भारतेंदु हैं। ( )

   (ग) नाटक और एकांकी के तत्व एक समान होते हैं। ( )

   (घ) "अंधेर नगरी" नाटक में धर्म पर व्यंग किया गया है। ( )

   (ङ) दूसरी भाषाओं के नाटकों के अनुवाद का कार्य भारतेंदु युग में सबसे अधिक हुआ। ( )

2. नीचे कुछ नाटककारों और कोष्ठक में उनके प्रसिद्ध नाटकों के नाम दिए गए हैं। आप नाटककार के नाम के सामने उसकी रचना का नाम लिखिए।

   (क) जयशंकर प्रसाद ....

   (ख) भारतेंदु हरिश्चंद्र ....

   (ग) मोहन राकेश ....

   (घ) बालकृष्ण भट्ट ....

   (ङ) प्रतापनारायण मिश्र ....

   (गौ संकट, आषाढ़ का एक दिन, आधे-अधूरे, शिक्षा सदन, भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी, स्कंद गुप्त, ध्रुवस्वामिनी)

पाठ—15

हिंदी निबंध

हिंदी निबंध एवं आलोचना का आरंभ, भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग, और शुक्लोत्तर युग ।

अध्यापक : हिंदी में निबंध और आलोचना का विकास आधुनिक काल से आरंभ होता है। हिंदी निबंध के विकास को हम चार युगों में बाँट सकते हैं। ये युग हैं—

(1) भारतेंदु युग (2) द्विवेदी युग (3) शुक्ल युग और

(4) शुक्लोत्तर युग ।

छात्र प्रथम : सर ! क्या भारतेंदु ने निबंध भी लिखे थे ?

अध्यापक : जी हाँ ! भारतेंदु हरिश्चंद्र बड़े ही प्रतिभाशाली साहित्यकार थे। वे वास्तव में हिंदी के पहले निबंधकार और आलोचक हैं। उन्होंने धर्म, राजनीति, यात्रा, व्यंग-विनोद आदि अनेक विषयों पर निबंध लिखे हैं।

छात्र : सर ! भारतेंदु युग के दूसरे निबंधकार कौन-कौन हैं ? उनके विषय में भी कुछ बताइए।

अध्यापक : भारतेंदु के अलावा इस युग के प्रसिद्ध निबंधकार हैं—बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुन्द गुप्त, ज्वालाप्रसाद, राधाचरण गोस्वामी और अंबिका प्रसाद व्यास। बालमुकुंद गुप्त के निबंध "शिवशंभु का चिट्ठा" और "खत" अपने व्यंग्य के लिए प्रसिद्ध हैं।

छात्र : सर ! द्विवेदी युग के निबंध किस प्रकार के हैं ?

अध्यापक : भारतेंदु युग के निबंधों और आलोचना में भाषा में सुधार लाने की कोशिश अधिक नहीं थी। पर द्विवेदी युग में भाषा में सुधार लाने की बात पर अधिक ज़ोर दिया गया। द्विवेदी युग के निबंध भारतेंदु युग की तुलना में अधिक गंभीर विषयों पर लिखे गए हैं। इस सब का श्रेय महावीर प्रसाद द्विवेदी को ही है।

छात्र : इस युग के मशहूर निबंधकार कौन-कौन से हैं ?

अध्यापक : इस युग के प्रसिद्ध निबंधकार हैं—महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबू श्यामसुंदर दास, पद्मसिंह शर्मा, मिश्र बंधु, चंद्रधर शर्मा गुलेरी आदि। द्विवेदी जी ने अधिकतर ज्ञान बढ़ाने वाले निबंध ही लिखे हैं। उनके कुछ प्रसिद्ध निबंध हैं—"साहित्य की महत्ता", "कवि और कविता", "प्रतिभा", "नाटक और उपन्यास", "कालीदास का भारत", "दण्डदेव का आत्म निवेदन"।

अन्य कुछ निबंधकारों के निबंध इस प्रकार हैं—

गुलेरी जी का "कछुआ धरम", सरदार पूर्णसिंह का "आचरण की सभ्यता", "सच्ची वीरता" आदि।

पद्मसिंह शर्मा का "पद्मपराग" (निबंध संग्रह)। बाबू श्याम सुंदर दास तो अच्छे निबंधकार भी थे और अच्छे आलोचक भी।

छात्र : सर ! शुक्ल युग का नाम किसके नाम पर पड़ा है ?

अध्यापक : शुक्ल युग का नाम हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक और निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल के नाम पर पड़ा है ।

छात्र : सर ! अब हमें आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंधों के विषय में कुछ बताइए ।

अध्यापक : आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी के महान निबंधकार एवं आलोचक हैं । आचार्य शुक्ल ने हिंदी निबंध और आलोचना को नई दिशा दी । शुक्ल जी ने साहित्यिक, मनोवैज्ञानिक और सैद्धांतिक सभी तरह के निबंध लिखे हैं । उनके निबंध संग्रह चिंतामणि भाग–1 तथा चिंतामणि भाग–2 हिंदी साहित्य में अपना प्रमुख स्थान रखते हैं । आचार्य शुक्ल के कुछ प्रसिद्ध निबंध हैं—लोभ और प्रीति, ईर्ष्या, श्रद्धा, क्रोध, कविता क्या है ? आदि ।

छात्र : सर ! शुक्ल युग के अन्य निबंधकार कौन-कौन है ?

अध्यापक : शुक्ल युग के अन्य प्रमुख निबंधकार हैं—बाबू गुलाब राय, माखन लाल चतुर्वेदी, वियोगी हरि और वासुदेव शरण अग्रवाल ।

छात्र : रामचंद्र शुक्ल के बाद किस प्रकार के निबंध लिखे गए तथा इस युग वे प्रमुख निबंधकार कौन-कौन थे ?

अध्यापक : शुक्लोत्तर युग के प्रसिद्ध निबंधकारों में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आचार्य नंददुलारे बाजपेयी, डॉ० रामविलास शर्मा, डॉ० नगेंद्र, दिनकर, प्रभाकर माचवे आदि के नाम प्रसिद्ध हैं । इस युग में वर्णनात्मक तथा यात्रा संबंधी निबंध भी लिखे गए । यात्रा संबंधी निबंध लिखने में राहुल सांकृत्यायन का नाम मशहूर है ।

छात्र : इस युग के कुछ प्रसिद्ध निबंधकारों के निबंधों के बारे में बताइए ।

अध्यापक : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें से "अशोक के फूल", "कल्पलता", "विचार और विमर्श" प्रसिद्ध हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में भारतीय प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का चित्रण देखने को मिलता है। द्विवेदी जी ने साहित्य, संस्कृति, ज्योतिष आदि अनेक विषयों पर निबंध लिखे हैं। डॉ० नगेंद्र भी इस युग के प्रमुख निबंधकार हैं। "विचार और विवेचन", "विचार और अनुभूति", "विचार और विश्लेषण" आदि इनके अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। प्रगतिशील विचारों के निबंध लेखकों में डॉ० रामविलास शर्मा, शिवदान सिंह चौहान आदि के नाम प्रमुख हैं।

छात्र : सर ! शुक्ल युग और शुक्लोत्तर युग में हिंदी आलोचना की स्थिति क्या रही इसके विषय में भी कुछ बताइए।

अध्यापक : हिंदी के जो अच्छे निबंधकार हैं, प्राय: वे ही अच्छे आलोचक भी हैं। शुक्ल युग में आचार्य शुक्ल, बाबू गुलाब राय, श्याम सुंदर दास आदि अच्छे आलोचक थे। शुक्लोत्तर युग में भी ऊपर बताए गए सभी निबंधकारों ने अच्छी आलोचनाएँ भी लिखी हैं। आधुनिक आलोचना के क्षेत्र में डॉ० नामवर सिंह का नाम भी उल्लेखनीय है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी में निबंध लेखन और आलोचना का आरंभ भारतेंदु युग से होता है। द्विवेदी युग में निबंध लेखन और आलोचना का अधिक विकास होता है किंतु निबंध लेखन और आलोचना को उच्च स्थान शुक्ल युग और उस के बाद मिलता है। आजकल हिंदी में सभी सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक आदि सभी विषयों पर निबंध लिखे जा रहे हैं। निबंध लेखन के साथ हिंदी आलोचना की भी काफ़ी उन्नति हुई है।

अभ्यास

1. कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए—

   (क) हिंदी में आलोचना और निबंध का विकास..................में होता है।
   (आधुनिक काल, भक्तिकाल)

   (ख) हिंदी निबंध के विकास को हम भारतेंदु युग, द्विवेदी युग..............
   में बाँट सकते हैं। (शुक्लोत्तर युग, शुक्ल युग)

   (ग) बालमुकुंद गुप्त का निबंध "शिव शंभु का चिट्ठा" ....के
   लिए प्रसिद्ध हैं। (मनोरंजन, व्यंग्य)

   (घ) रामचंद्र शुक्ल ने...............को नई दिशा दी। (कहानी, आलोजना)

   (ङ) हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रसिद्ध..................थे।
   (कहानीकार, निबंधकार)

2. नीचे दिए गए प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए।

   (क) हिंदी निबंधों के विकास को किन-किन चार भागों में बाँटते हैं ?

   (ख) भारतेंदु हरिश्चंद्र ने किस-किस प्रकार के निबंध लिखे हैं ?

   (ग) निबंधों के क्षेत्र में द्विवेदी युग के निबंधकारों का कौन सा महत्वपूर्ण योगदान है ?

3. नीचे कुछ निबंधकारों के नाम दिए गए हैं। कोष्ठक में इनकी रचनाओं के नाम दिए गए हैं। आप निबंधकार के नाम के सामने उसकी रचना का नाम लिखिए—

   (क) पद्मसिंह शर्मा ....

   (ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी ....

   (ग) रामचंद्र शुक्ल ....

   (घ) चंद्रधर शर्मा गुलेरी ....

   (चिंतामणि, पद्मपराग, कछुआ धरम, अशोक के फूल)

शब्दावली

संकेत-सूची

सं. पु.	संज्ञा पुल्लिंग
सं. स्त्री.	संज्ञा स्त्रीलिंग
वि.	विशेषण
अ.	अव्यय
क्रि.	क्रिया

कठिन शब्द

अकुलाना (क्रि.)	to feel uneasy, to feel restless
अज्ञात (वि.)	Unknown
अतिरिक्त (वि.)	additional, extra
अत्याचार (सं. पु.)	tyranny, atrocity
अद्वैत (सं. पु.)	absence of duality
अद्वैतवाद (सं. पु.)	monism
अधिकतर (वि.)	mostly
अधिकांश (वि.)	most
अनुभव (सं. पु.)	experience
अनुभूति (सं. स्त्री.)	emotional experience, realisation
अवस्था (सं. स्त्री.)	condition, state
अवास्तविक (वि.)	unreal
अविनाशी (वि.)	imperishable, immortal
अहंकार (सं. पु.)	yanity, egotism, vainglory
आंदोलन (सं. पु.)	movement, agitation
आचार-विचार (सं. पु.)	conduct and thought, manners and morals
आडंबर (सं. पु.)	ostentation, showing off

आनंद (सं. पु.)	happiness, bliss
आमंत्रण (सं. पु.)	invitation
आरंभिक (वि.)	elementary, primary
आर्थिक (वि.)	economic
आलोचक (सं. पु.)	critic
आलोचना (सं. स्त्री.)	criticism
आश्चर्य (सं. पु.)	wonder, surprise
ईर्ष्या (सं. स्त्री.)	jealowsy
उत्साह (सं. पु.)	enthusiasm, zeal
उद्देश्य (सं. पु.)	aim, motive
उद्योग-धंधा (सं. पु.)	Industry
उपन्यासकार (सं. पु.)	novelist
उपवास (सं. पु)	fast
उल्लेखनीय (वि.)	remarkable
एकदम (अव्य.)	suddenly, perfectly, in one breath
ऐतिहासिक (वि.)	historical
कमजोर (वि.)	weak, lacking in strength
कल्पना (सं. स्त्री.)	imagination
कहानीकार (सं. पु.)	storywriter
कीर्तन (सं. पु.)	congragational singing, (in praise of the gods.)
क्रीड़ा (सं. स्त्री.)	play, dalliance, fun and frolic
क्रोध (सं. पु.)	anger
खंड (सं. पु.)	portion, part, section

ख़तरा (सं. पु.)	danger, risk
खासकर (वि.)	specially, particularly
गाथा (सं. स्त्री)	story, tale
घुटन (सं. स्त्री)	suffocation
चमत्कार (सं. पु.)	wouder, marvel, miracle
चित्रण (सं. पु.)	act of painting, delineation, graphic description
चित्रित (वि.)	delineated, portrayed, painted
चुकाना (क्रि.)	to pay off, to repay
छापाखाना (सं. पु.)	printing press
छायावाद (सं. पु.)	romanticism
छायावादोत्तर (वि.)	post-romantic
जागरूक (वि.)	alert, vigilant
जासूसी (वि.)	detective
जीव (सं पु.)	living being, creature, animal, soul
जोशभरी (वि.)	spirited, enthusiastic
ज्ञानमार्गी (वि.)	one who treads along the path that leads to supreme knowledge
ठिठुरना (क्रि.)	to shiver with cold
तथ्य (सं. पु.)	knowledge
तिलस्मी (वि.)	magical, talismanic
तेल-फुलेल (सं. पु.)	make up aids, beauty aips
दार्शनिक (वि.)	philosopher
दिखावा (सं. पु.)	ostentation, pomp and show

दृश्य (सं. पु.)	sight, scene, visible
नाटककार (सं. पु.)	dramatist
नामकरण (सं. पु.)	the act of naming a person, a thing or a period etc.
नायक (सं. पु.)	leader, hero (of a story, novel, poetry etc.)
नायिका (सं. स्त्री.)	heroine (of a story, novel, poetry etc.)
नाश (सं. पु.)	annihilation, destruction
निबंधकार (सं. पु.)	essayist
निराकार (वि.)	formless, shapeless
निर्गुण (वि.)	without attributes or qualities
पत्र (सं. पु.)	newspaper
पत्रिका (सं. स्त्री.)	magazine, journal, periodical
पद (सं. पु.)	post, rank
पद्धति (सं. स्त्री.)	system, method
परंपरा (सं. स्त्री.)	tradition
परिचय (सं. पु.)	introduction
परिस्थिति (सं. स्त्री.)	circumstance, situation
पहेली (सं. स्त्री.)	riddle, puzzle
पालन-पोषण (सं. पु.)	upbringing, nourishing
पीड़ा (सं. स्त्री.)	pain, ache, agony, suffering
पुराण (सं. पु.)	ancient Hindu mythological scriptures
पौराणिक (वि.)	mythological
प्रकाशित (वि.)	published

प्रकृति (सं. स्त्री.)	nature
प्रचार-प्रसार (सं. पु.)	publicity, propaganda, expansion
प्रणाली (सं. स्त्री.)	channel, mode, system
प्रतिनिधि (सं. पु.)	representative, delegate, agent
प्रतिभाशाली (वि.)	genius, brilliant
प्रवृत्ति (सं. स्त्री.)	tendency, mentality
प्रसारित (वि.)	broadcast, expanded
प्रीति (सं. स्त्री.)	love, affection
प्रधानता (सं. स्त्री.)	importance, prominence
प्रेममार्गी (वि.)	one who treads along the path of love that leads to god.
प्रेरणा (सं. स्त्री.)	inspiration, impetus
प्रोत्साहित (वि.)	encouraged
फीचर (सं. स्त्री.)	feature film
बदलाव (सं. पु.)	replacement
बिलकुल (अ.)	perfectly, absolutely
बौद्धिकता (सं. स्त्री.)	intellectualism, intellectuality
ब्रह्म (सं. पु.)	God
भूमिका (सं. स्त्री.)	introduction, bakground, role
भेदभाव (सं. पु.)	discrimination
भोग-विलास (सं. पु.)	indulgence in luxury, sexual pleasure
मंडली (सं. स्त्री.)	party, team (devotional singers)
मंत्र (सं. पु.)	vedic hymn, sacred form, mystical verse or magical formula
मतलब (सं. पु.)	meaning, purpose

मनोवैज्ञानिक (सं. पु./वि.)	psychologist, psychological
मार्मिक (वि.)	poignant, touching, moving
फकीर (सं. पु.)	muslim saint, hermit
मनोरंजक (वि.)	entertaining, interesting
मनोवेग (सं. पु.)	impulse
मशहूर (वि.)	famous
महत्वपूर्ण (वि.)	important, significant
माया (सं. स्त्री.)	illusion, delusion
मिथ्या (वि.)	false, untrue
यथार्थ (वि.)	real, actual
युग (सं. पु.)	age, long period
योगदान (सं. पु.)	participation
रहस्य (सं. पु.)	secret, mystery
रहस्यवादी (वि.)	mystic
राजनैतिक (वि.)	political
राष्ट्रीयता (सं. स्त्री.)	nationality, nationalism
रेडियो रूपक (सं. पु.)	radioplay
रूप धारण करना (क्रि.)	to take shape, to take form
लज्जा (सं. स्त्री.)	shame, modesty shyness
लोभ (सं. पु.)	greed, avarice, covetousness
वनवास (सं. पु.)	dwelling in forest, exile
वातावरण (सं. पु)	atmosphere, environment
वास्तविक (वि.)	real, actual
विचारधारा (सं. स्त्री.)	ideology, line of thinking

विधवा (सं. स्त्री.)	widow
विधा (सं. स्त्री.)	form, type (e. g. literary form)
विभाजन (सं. पु.)	division, partition
विरह (सं. पु.)	state of separation
विरोध (सं. पु.)	opposition
विविधता (सं. स्त्री.)	diversity, veriation
विवेचन (सं. पु.)	critical, appreciation, evaluation
विश्लेषण (सं. पु.)	analysis
विषय (सं. पु.)	subject, topic
वेश्या (सं. स्त्री.)	prostitute
विशेषता (सं. स्त्री.)	speciality
विस्तार (सं. पु.)	extension
व्यंग्य (सं. पु.)	irony, sarcasm, satire
व्यवस्था (सं. स्त्री.)	arrangement, management
शताब्दी (सं. स्त्री.)	century, 100 years
शब्दावली (सं. स्त्री.)	vocabulary, terminology
शारीरिक (वि.)	bodily, physical
शिलालेख (सं. पु.)	petrograph, stone inscription
शिष्य (सं. पु.)	disciple, pupil
शील (सं. पु.)	moral, conduct
शुरुआत (सं. स्त्री.)	beginning
शृंगार-प्रधान (वि.)	amatory, erotic (poetry)
शृंगार-रस (सं. पु.)	erotic sentiments (a term used in Indian literary criticism)

शैली (सं. स्त्री.)	style, method
श्रद्धा (सं. स्त्री.)	faith, reverence
श्रेय (सं. पु.)	credit
शैतान (वि. सं. पु.)	mischievous, devil
श्रेष्ठतम (वि.)	the very best, most prominent
शोषक (सं. पु.)	exploiter
शोषण (सं. पु.)	exploitation
शोषित (वि.)	exploited
संक्षेप (सं. पु.)	summary
संग्रह (सं. पु.)	collection, compilation
संगृहीत (वि.)	collected, compiled
संपर्क (सं. पु.)	contact, liaison
संपादन (सं. पु.)	editing
संप्रदाय (सं. पु.)	community (religious) school (of thought)
संस्मरण (सं. पु.)	memoir, reminiscence
सखा (सं. पु.)	friend, intimate
सगुण (वि.)	possessed of attributes (as God), endowed with qualities
सजीव (वि.)	living
समकालीन (वि.)	contemporary
समर्पण (सं. पु.)	surrender, dedication
समस्या (सं. स्त्री.)	problem
सम्राट (सं. पु.)	Emperor

सर्वज्ञ (सं. पु./वि.)	omniscient
सशक्त (वि.)	forceful, powerful
सहज (वि.)	easy, simple, natural
सहानुभूति (सं. स्त्री.)	sympathy
साकार (वि.)	having a form
साधु (सं. पु.)	hermit, saint
सामंत (सं. पु.)	feudal, lord
साम्यवादी (वि. सं. पु.)	communistic, communist
साहित्यकार (सं. पु.)	litterature writer
सिद्धि (सं. स्त्री.)	divine attainment
सिलसिलेवार (वि.)	in due order, in orderly manner
सैद्धांतिक (वि.)	theoretical
सौंदर्य (सं. पु.)	beauty, loveliness
स्तुतिगान (सं. पु.)	praise, prayer, invocation
स्वाभाविक (वि.)	natural
हासिल करना (क्रि.)	to obtain
हिम्मत (सं. स्त्री.)	courage